: तीसरा अध्याय :

उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं का स्वरूप

: तीसरा अध्याय :

"उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं का स्वरूप"

साहित्य के क्षेत्र में नित्य होनेवाले प्रयोगों की स्थिति में हिंदी नाटक साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक बन गया है। ऐसी स्थिति में आधुनिक हिंदी नाटकों की नायिकाओं को किसी विशिष्ट परिभाषा में परिबध्द करना बहुत ही मुश्किल काम है। प्राचीन काल के संस्कृत नाटक तथा रीतिकालीन और मध्ययुगीन नाटकों की नायिकाओं की परिकल्पना आधुनिक नाटकों की नायिकाओं की परिकल्पनाओं की अपेक्षा नितान्त भिन्न थी।

सामान्यतः नायक की पत्नी या प्रेयसी को नायिका कहा जाता रहा है। प्राचीन नाटकों पर इसका पूरा प्रभाव हमें दिखाई देता है। "धनंजय विरचितमं दशकरूपम" में लिखा है कि "स्वान्या साधारण स्त्रीति तदगुणा नायिका त्रिधा"[१] इसमें नायिका के तीन प्रकार माने गये हैं -

(१) स्वकीया (२) परकीया (३) साधारण स्त्री।

"मुग्धा मध्या प्रगल्भाति स्वीया शीलार्ज वादियुक्त"[२] इसतरह स्वकीया के फिर तीन भेद माने गये हैं - (१) मुग्धा (२) मध्या (३) प्रगल्भा ।

"नाटयशास्त्र" में भी केन्द्रीय पुरूष या नारी पात्र के लिए नायक या नायिका शब्द प्रयुक्त किया गया है परंतु आधुनिक युग में नाटक के नायक की पत्नी या प्रेयसी ही नायिका निर्धारित नहीं होती है बल्कि उसकी बहन, माता या अन्य संबंधित नारी भी नाटक की नायिका हो सकती है।

नाटक के नारी पात्रों में कोई-न-कोई ऐसी नारी होती है जो कथानक का नेतृत्व करती हुई उसे अन्तिम उद्दैश्य तक ले जाती दिखाई देती है। उसका व्यक्तित्व

---

१. संपादक : डॉ.रमाशंकर त्रिपाठी धनंजय विरचितमं दशकरूपम पृ- १३६

२. - वही - पृ - १३६

सभी नारी पात्रों में अत्यधिक निखरा हुआ, प्रबल एवं आकर्षक होता है। नारी पात्रों में वह अपना विशिष्ट स्थान रखती है। नाटक का कथानक उसके इर्द-गिर्द घुमता हुआ नजर आता है। फलागम की स्थिति भी उसी प्रमुख नारी पात्र को प्राप्त होती है। अंत चाहे सुखद हो या दुःखद, पर इस प्रमुख नारी पात्र का प्रभाव उसपर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो सकता है। ऐसी प्रमुख नारी पात्र को हम नाटक की नायिका कह सकते हैं। आधुनिक हिंदी नाटकों की व्यापकता का प्रभाव देखते हुए हम नाटक की नायिका को परिभाषा की सीमा में बाँध नहीं सकते हैं फिर भी नाटक के कथानक के विकासक्रम में प्रमुख स्थान रखनेवाली और नाटक को फलागम की और ले जानेवाली नारी को हम नायिका कह सकते है। अगर नाटक नायकप्रधान है तो उस नाटक के प्रमुख नारी पात्र को हम नायिका कह सकते हैं।

उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाएँ भी इसी परिभाषा में बध्द हैं। उनके सभी नाटक आधुनिक और सामाजिक होने के कारण उनकी नायिकाओं के स्वरूप में हमें विविधता नजर आती है। उनके सभी नाटक नायिका प्रधान नहीं माने जा सकते। उनके नाटकों में ज्यादातर नाटक नायिका-प्रधान हैं और कुछ नाटक नायक प्रधान भी हैं मगर नायकप्रधान नाटकों के मुख्य नारीपात्र को हम नायिका कह सकते हैं।

अश्कजी का केवल "जय-पराजय" एकमात्र ऐतिहासिक नाटक छोड़कर बाकी सभी नाटक मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित नजर आते हैं इसीकारण हम नायिकाओं के स्वरूप पर इस तरह प्रकाश डाल सकते हैं -

(१) शैक्षिक दृष्टिकोण।

(२) वर्गीय दृष्टिकोण।

(३) आर्थिक दृष्टिकोण।

३.१ नायिकाओं का स्वरूप :- शैक्षिक दृष्टिकोण -

साधारणतः शैक्षिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर हम नायिकाओं को (१)अशिक्षित (२)शिक्षित और (३)उच्चशिक्षित कह सकते हैं। अश्क के नाटकों की नायिकाएँ मध्यवर्गीय

परिवार की होने के कारण अशिक्षित तो नहीं हैं, पर शिक्षित और उच्चशिक्षित हैं।

३:१:१ अशिक्षित नायिकाएँ :-

इसमें समाज के ऐसे लोग आते हैं जो बिलकुल पढ़-लिख नहीं सकते हैं। अश्क के नाटकों की नायिकाएँ मध्यवर्गीय समाज की होने के कारण अशिक्षित नहीं हैं।

३:१:२ शिक्षित नायिकाएँ :-

इसमें समाज के ऐसे लोग आते हैं जा पढ़-लिख सकते है। आधुनिक समाज में रहनेवाली नायिकाओं का चित्रण अश्क ने किया है इसीकारण इनके सभी नाटकों की नायिकाएँ शिक्षित हैं।

अश्कजी का "जय-पराजय" एकमात्र ऐतिहासिक नाटक है। इस नाटक की नायिका मेवाड़ के राजा लक्षसिंह की पहली पत्नी बड़ी रानी है। मेवाड़ के राजा लक्षसिंह के दरबार में उनके बड़े पुत्र चंड के लिए मंडोवर से नारियल आता है तब मजाक में राणा लक्षसिंह कहते हैं "युवराज के लिए होगा, हम बूढ़ों के लिए नारियल कौन लायेगा"[१] यह सुनकर युवराज चंड पिता ने जिस नारी के लिए इच्छा प्रकट की उस मंडोवर राजकुमारी हंसाबाई से ही शादी करने के लिए हठ करते हैं। तब राणा लक्षसिंह अपनी पत्नी से कहते हैं - "तुम समझाओं उसे रानी! मैं तो हार गया हूँ। तुम उसकी माँ हो, तुम्हारे उपदेशों ने उसे हठी, सत्यव्रती, सच्चा राजपूत बना दिया है।"[२]

पुत्र के इस हठ को जब महाराज लक्षसिंह झूठी मर्यादा कहते हैं तो रानी उनसे कहती है - "महाराज! राजपूतों ने सदा अपनी बात की टेक रखी है, आप उसे झूठी मर्यादा कहते हैं! इस दृष्टिकोण से तो पिता के प्रण को पालने के लिए भगवान राम का बन को जाना, वृध्द पिता को दुःख और क्षोभ में छोड़कर भी बन को जाना मूर्खता थी, झूठी मर्यादा की रक्षा थी। पितामह भीष्म का अपने पिता की इच्छा के लिए आयु-पर्यन्त ब्रह्मचारी रहकर अपने प्रण पर चट्टान की भाँति खड़े रहना भी विवेक हीनता थी, दम्भ था। महाराज! क्या बात पर मिट जानेवाले पितृ-भक्त भगवान राम और भीष्म मूर्ख थे ?"[३] अपने पुत्र का पिता के प्रति कर्तव्य वह योग्य समझती है।

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ- ४६
२. - वही - पृ- ६१
३. - वही - पृ-६२

महाराज की दूसरी शादी याने खुद के लिए सौतन लाकर अपना अपमान करना है यह जानते हुए भी वह एक राजपुतानी होने के नाते पुत्र को अपना कर्तव्य निभाने के लिए कहती है "जाओ बेटा! तुम्हारा कर्तव्य जो सिखाता है, तुम्हारी आत्मा जिस बात की साक्षी देती है, वही करो और प्रार्थना करो कि मुझ में सब कुछ सहने की शक्ति आ जाय। भगवान करे तुम अपने व्रत पर दृढ़ रहो और जब-जब भविष्य में चित्तौड-वासी इन पहाड़ो, इन चट्टानों को देखें, उनके हृदय-पट पर तुम्हारा चित्र खींचा जाय। उन्हें अपने उस युवराज की याद आ जाय, जो अपने कर्तव्य पर इन्हीं की भाँति स्थिर, अविचल अटल खड़ा रहा था।"[१]

पति और पुत्र दोनों को भी अपना कर्तव्य निभाने की सलाह से नायिका बड़ी रानी के संस्कारयुक्त विचार प्रकट होते हैं।

"स्वर्ग की झलक" की नायिका भाभी लाला गिरधारीलाल की पत्नी है। उसकी आयु लगभग ३५ वर्ष की है। वह दिखने में सुंदर और हसमुख है। जब लाला गिरधारीलाल के साथ उसका विवाह हुआ था तो वह केवल मैट्रिक तक पढ़ी थी। शादी के बाद उसने घर में ही पढ़-लिखकर बी.ए. की डिग्री प्राप्त की है। ३५ वर्ष की उम्र में शिक्षा का साथ मिलने से उसमें गंभीरता आ गयी है। उसके देवर रघु की पत्नी परलोक सिधार चुकी है। रघु की पहली पत्नी से कुछ कम पढ़ी-लिखी होने के कारण बनती नहीं थी। अब दूसरी शादी वह अच्छी पढ़ी-लिखी लड़की से करना चाहता है। रघु के भाई गिरधारीलाल उसकी शादी उसकीही साली रक्षा से करना चाहते हैं जो घर का काम अच्छी तरह से कर सकती है। रघु को यह रिश्ता मंजूर नहीं है। भाभी अपने देवर की बात को समझती है। वह अपने पति से कहती है "मैं कहती हूँ, हँसी के साथ हँसी रही। आप रक्षा के लिए क्यों इतना जोर दे रहे हैं।"[२] आगे वह यह भी कहती है "जब उसे पसन्द ही नहीं तो कै दिन निभ सकेगी ? फिर वही रोज की किल-किल होगी।"[३] भाभी अपने देवर की शादी जबरदस्ती रक्षा से नहीं करना चाहती है। अगर

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - ६४-६५

२. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - ३०

३. - वही - पृ - ३०

यह शादी हो गयी तो उन दोनों के रोज झगड़े हो जायेंगे इसका उसे अंदाज है।

भाईसाहब को ज्यादा पढ़ी-लिखी आधुनिक लड़कियाँ पसन्द नहीं है। वे पुराने संस्कारों को माननेवाले आदमी हैं। वे अपनी पत्नी से कहते हैं "तुम्हारे अध्ययन ने तुम्हें समय के साथ रखा है, पर मेरा कारोबार मुझे और भी पीछे ले गया है।"[१]

पढ़ी-लिखी होने के कारण भाभी ने समय के साथ समझौता करना सीखा है। इसी शादी के सिलसिले में वह अपने भाई रामप्रसाद से भी यह कहती है "....बाजार में आदमी दो पैसे का मिट्टी का बर्तन लेने जाय तो चार जगह पूछता है, दस बार ठोंक-बजाकर देखता है। फिर जीवन के इस सबसे बड़े सौदे में क्यों इतनी उदासीनता से काम लिया जाय ?"[२]

भाभी अपने देवर के जीवन का उसकी मर्जी के खिलाफ सौदा नहीं करना चाहती है। उसके शिक्षित होने के संस्कार ही उसके इस तरह के व्यवहार के मूल में है।

"छठा बेटा" नाटक मूलतः नायकप्रधान है। इसकी नायिका है माँ। उसके चेहरे पर दुःखों ने गहरे निशान छोड़ दिये हैं। पति शराबी होते हुए भी हर हाल में वह बच्चों की जिम्मेदारी लेती है। बच्चों को समझाने का प्रयास करती हैं।

"कैद" की नायिका अप्पी विवाह के पहले चंचल और हवा-सी आजाद रहनेवाली लड़की थी। उसका विवाह उसकी मर्जी के विरूद्ध उसकी अपनी बहन दिप्पो की मृत्यु के उपरान्त उसके पति के साथ किया गया है। अप्पी पहले अपने मौसी के छोटे देवर दिलीप से प्यार करती थी परंतु अप्पी के मौसा ने दिलीप के बेपरवाह रहने के कारण को लेकर इस शादी को इन्कार कर दिया था। अप्पी का विवाह प्राणनाथ के साथ होता तो है पर वह दिलीप को भूल नहीं पाती।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - ७४
२. - वही - पृ - ८०
३. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - ७९

सदा बीमार रहनेवाली अप्पी एक दिन दिलीप के आने से बहुत खुश हो जाती है। दोनों मिलकर पुरानी यादों को ताजा करते है। अखनूर की खूबसूरती में भी दुःखी और उदास अप्पी को देखकर दिलीप उसे कहता है "और मैं सोचता था, मैं यहाँ रह जाता तो जाने क्या कुछ न लिख देता।"[१] तब अप्पी उसे कहती है "शायद तुम सच कहते हो, शायद यह कविता ही की संजीवनी थी, जिसने अब तक मुझे जिन्दा रखा। शायद मैं अपने अतीत के सुख में वर्तमान दुख को, अतीत की सुन्दरता में वर्तमान कुरूपता को भूले रही हूँ।"[२] अप्पी के ये कथन सुनकर दिलीप कहता है "तुम्हारी कसम तुम अब भी कवि हो अप्पी, हालाँकि पिछले आठ बरसों से तुमने एक भी लाइन नहीं लिखी।"[३]

अप्पी विवाह के पूर्व कविता किया करती थी मगर दिलीप से विवाह न होने के कारण उसने लिखना बंद कर दिया है। वह निराश हो गयी है। वह दिलीप से कहती है "मैं खुद कई बार अंजाने, अथाह अँधेरों में भटकती रहती हूँ। कभी-कभी मुझे लगता है, जैसे यह अँधेरा मुझे, मेरी इच्छाओं, आकांक्षाओं, सपनों, स्मृतियों - सब को निगल जायेगा और मैं उस लाश की तरह पडी रह जाऊँगी, जिसका सारा खून कभी न तृप्त होनेवाली किसी जोंक ने चूस लिया हो। लेकिन तुमने सच कहा, आदमी अँधेरे का भी आदी हो जाता है और जहाँ पहले अँधेरा उस का खून चूसता है, वहाँ वह उसी से खून हासिल करता है।"[४]

अप्पी के मन के अंदर की गहराइयों में छिपे हुए भाव बाहर आना चाहते हैं। वह दिलीप से कहती भी है ".....भावों का एक तूफान सा मेरे मन में उमड़ उठा है। न जाने यह तुम्हारे ही आने की प्रतीक्षा कर रहा था। तुम रहो तो यह शब्दों और पंक्तियों का रूप धर ले।"[५]

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   कैद   पृ - ७९
२. - वही -   पृ - ७९
३. - वही -   पृ - ८०
४. - वही -   पृ - ९०
५. - वही -   पृ - ९०

अप्पी सचमुच प्रतिभा संपन्न कवयित्री है। दिलीप के आने से उसके मन के भाव शब्दों का रूप प्रकट कर लेते हैं। अप्पी के यही शब्दरूपी भाव उसके शिक्षित विचारों को स्पष्ट कर देते है।

"उड़ान" की नायिका माया ऐसी नारी है जिसके घरवाले, सगे-संबंधी सभी रंगुन की बमबारी में जीवित नहीं रह पाये हैं। माया घुमते हुए बमबारी में बचे और भटकते हुए लोगों के काफिले में आकर मिल जाती है। नाहुँग नदी की लहरों से काफिले के लोगों को बचाते वक्त उसका साथी मदन उससे बिछुड गया है। माया जंगल में घुमते-घुमते बीमार अवस्था में शंकर और रमेश को मिल जाती है। शंकर एक शिकारी है। जब वह बंदूक चलाना माया को सिखाना चाहता है तो माया उसे कहती है "मैंने शिकार बहुत देखा है और मुझे उस से सख्त नफरत है। कभी मैं भी शिकार को दिलचस्प समझती थी। कहीं यदि आप लोग बमबारी के दिनों में रंगून होते, निहत्थे लोगों को हवाई जहाजों में छिपे शिकारियों की गोलियों का शिकार बनते देखते तो आपको इस शिकार की दिलचस्पी और उसकी हकीकत का पता चल जाता।"[१]

माया ने रंगून की बमबारी में बिना किसी कुसुर मारे गये लोगों को देखा है। वह रमेश से कहती है "मैनें देखा है, मैंने इसी प्रकार की गोलियों से बिसियों को मौत के घाट उतरते देखा है। मैंने माताओं को देखा है, जो गोलियों की वर्षा में, मुर्दा बच्चों को सीने से लगाये लोहू में लथपथ भाग रही थी और मुर्दा शिकारियों को देखा है, जो हवाई जहाजों में बैठे गोलियों की वर्षा करते थे और दिखायी न देते थे।"[२]

रमेश और शंकर दोनों भी अपने-अपने तरीके से माया से प्रेम जताने का प्रयास करते हैं पर माया मदन को चाहती है। मदन को समझाते हुए वह कहती है "मैं सच कहती हूँ, मैं दोनों से डरती हूँ। एक आकाश में बसता है। वह मुझे अपने साथ आकाश की ऊँचाइयों में लिये उड़ना चाहता है। दूसरा उस गहरे अंधियारे खड्ड से भी अन्धकार-मय संसार का वासी है। उसका बस चले तो न जाने मुझे किन अँधेरी गहराइयों में ले जाय! मैं दोनों से डरती हूँ। ऊँचाई या गहराई मेरा आदर्श नहीं। गहरे

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ - १२५-२६

२. - वही - पृ - १२७

खड्डों और ऊँचे शिखरों से मैं ऊब गयी हूँ। मैं समतल धरती चाहती हूँ - समतल और सुखद! "[१]

मदन माया पर सन्देह करता है ओर अपने पास उसके लिए दो समय का खाना भी नहीं है कहते हुए उसे साथ चलने से इन्कार करता है तब माया उसे कहती है "......तुम समझते हो, उन लोगों का धन,ऐश्वर्य और सुख-सुविधा मुझे क्षणभर के लिए भी बाँध कर रख सकती है। तुम्हारे साथ मैं रास्ते की जड़ी-बूटियाँ खाकर गुजारा कर सकती हूँ, सूखी-कठोर धरती पर सो सकती हूँ।"[२] माया को पैसा तथा ऐश्वर्य से मतलब नही है। वह मदन के साथ किसी भी हालत में रहने के लिए तैयार है।

जंगलों में जड़ी-बुटियाँ खाकर घुमती हुई बीमार माया को शंकर आसरा देता है परंतू जब माया अपने साथी मदन के आनेपर उसके साथ चली जाना चाहती है तो शंकर उसे बन्दूक के डर से रूकवाना चाहता है। माया उससे डरे बिना कहती है - "अहसान कर के जताना या उसका बदला माँगना उसका मोल घटा देता है। मैं तुम्हारी कृपा को भूली नहीं। भूल जाती, तो तुम इस तरह जीवित खड़े दिखायी न देते।"[३] शंकर का उसपर किया हुआ एहसान उसे मालूम है। इसी कारण वह शंकर को मारती नहीं है।

माया ने शंकर से रंगुन की बमबारी का वर्णन करते हुए बेकसुर लोगों के प्रति प्रकट की आस्था और मदन के मन में उत्पन्न संदेह दूर करने के लिए उसे समझाने के लिए की गई कोशिश से उसका शिक्षित स्वरूप प्रकट हो जाता है।

"अलग-अलग रास्ते" की नायिका रानी है। उसकी शादी उसके पिता ताराचन्द ने त्रिलोक के साथ कर दी है जिसने हालही में वकालत करना शुरू किया है। दहेज न देने की वजह को लेकर रानी के ससुराल के सभी सदस्यों के साथ-साथ उसके पति ने भी उसे मानसिक यातनाएँ दी हैं। रानी एक बार मायके वापस आकर पिता के कहने

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ - १४६
२. - वही - पृ - १४७
३. - वही - पृ - १५२

पर फिर ससुराल गयी थी मगर ससुराल के लोगों के दिये कष्ट से तंग आकर वह फिर अपने पिता के घर वापस आ गयी है। उसने स्कूली शिक्षा प्राप्त की है पर उसके भाई पूरन का कहना है कि वह कालेज की शिक्षा भी प्राप्त करे। पं.ताराचन्द अपने मित्र शिवराम से रानी के बारे में कहते हैं "शिवराम।......उसने कॉलेज में प्रविष्ट होने की इच्छा प्रकट की और यदयपी मैं लड़कियों की शिक्षा को उतना पसन्द नहीं करता, किन्तु पूरन के जोर देने पर.....मैंने इन्कार नहीं किया।"[१] रानी की भी आगे पढ़ने की इच्छा है। उसका भाई पूरन उसके विचारों से सहमत है।

रानी की छोटी बहन राज की भी शादी हो चुकी है मगर उसके पति प्रोफेसर मदन एक पढ़ी-लिखी लड़की से प्यार करता था और उससेही शादी करना चाहता था पर पिता के न मानने से उसने राज से शादी की है। मदन राज को पसन्द नहीं करता है। राज उसका मन बदलने का प्रयत्न जरूर करती है पर असफल होती है। प्रोफेसर मदन कॉलिज होस्टेल के सुपरिंटेंडेंट हो जाने पर होस्टल में ही जाकर रहने लगते हैं। राज के सास-ससुर अच्छे हैं, उनकी तरफ देखकर ही राज ने अब तक सब-कुछ सहा था। राज की बुरी हालत देखकर रानी को क्रोध आ जाता है वह राज से कहती है "मैं पूछती हूँ, जब वे एक ओर लड़की को चाहते थे, तो उन्होंने क्यों की यहाँ शादी? वे पढ़े-लिखे हैं, समझदार हैं, प्रोफेसर हैं। बच्चे नहीं कि उनके पिता ने दो चाँटे मारकर उन्हें ब्याह के मण्डप पर बैंठा दिया हो। क्यों की उन्होंने यह शादी ?"[२] अपनी बहन की जिंदगी इस तरह बरबाद होते वह नहीं देख सकती। वह सबका विरोध करती है।

रानी को भी केवल दहेज में मोटर और मकान न मिलने की वजह से ससुराल में तंग किया गया है। मकान और मोटर की लालच में उसका पति त्रिलोक उसे लेने के लिए आता है। एक वर्ष बाद उसे पत्नी की याद आती है। वह, रानी से कहता है कि उसे अब सास, ननद, देवरानी, जेठानी किसी के भी ताने नहीं सुनने पडेंगे। तब रानी त्रिलोक से कहती है "किन्तु आप के ताने ? अपने मन की स्थिति

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   अलग-अलग रास्ते   पृ - ५८

२. - वही -   पृ - ७७

आप कैसे सुधारेंगे ?"[१] मोटर और मकान की लालच में आये पति की चालबाजी को रानी अच्छी तरह जानती है और उसके साथ जाने से इन्कार कर देती है।

बहन से शादी कर फँसानेवाले उसके पति प्रोफेसर मदन के विरोध में बोलना और खुद लालची पति के सामने झुकने से इन्कार करने के पिछे रानी के शिक्षा का योगदान कुछ हद तक महत्व रखता है।

"अंजोदीदी" नाटक की नायिका अंजली पतले छरहरे शरीर की दुर्बल नसोंवाली स्त्री है। बचपन से ही नाना की गोद में खेलने से उसके मनपर नाना के विचारों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। वह सब कुछ समयपर घटित हुआ देखना चाहती है। उसने अपने पति, पुत्र तथा नौकरों को भी इस तरह नियंत्रित किया हैं कि वे भी वक्त पर सब काम करते हैं। उसकी सहेली अनिमा अंजो के घर की अवस्था और समयनिष्ठा देखकर आश्चर्यचकित हो जाती है तब अंजो उसे कहती है "इस घर के कण-कण को मैंने व्यवस्था, समय-निष्ठा और सभ्य लोगों को रंग-ढंग सिखाये हैं।"[२] अंजो ने घर के लोगों को घड़ी के अनुसार चलना सिखाया है। घर के सब लोगों का खाने का, काम करने का, सोने का, उठने का समय निश्चित है। वह अपनी सहेली अनिमा से कहती है - "जीवन स्वयं एक महान घड़ी है। प्रातः संध्या उसकी सुइयाँ हैं। नियमबध्द एक-दूसरी के पीछे घूमती रहती हैं। मैं चाहती हूँ - मेरा घर भी घड़ी की तरह चले। हम सब उसके पूर्जे बन जायँ और नियमपूर्वक अपना-अपना काम करते जायँ।"[३]

अंजो को नियमबध्दता प्रिय है। वह सब को घड़ी की तरह चलना सिखाती है। अंजो के इस तरह के बर्ताव के पिछे पूरी तरह शिक्षा का प्रभाव नहीं बल्कि उसके नाना के संस्कारों का प्रभाव अधिक है।

"पैंतरे" की नायिका बेगम रशीद रशीदभाई की पत्नी है। बेगम रशीद पच्चीस-छब्बीस वर्ष की गदराये शरीर की हमेशा होठों पर मंद मुस्कान रखनेवाली स्त्री है। उसके पति रशीदभाई फिल्मों में गीत, कहानी और सम्वाद लिखते हैं। अपनी कुछ

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   अलग-अलग रास्ते   पृ - १००
२. उपेंद्रनाथ अश्क   अंजोदीदी   पृ - ५३
३. - वही -   पृ - ५७

इच्छा-आकांक्षाओं के बावजूद भी वह पति के मन को संभालती है। उसके पति स्टंट फिल्मों में कहानी लिखते हैं पर पहली बार उन्हें सोशल फिल्म में कहानी लिखने का मौका मिल रहा है। उनके घर डायरेक्टर कादिर और उनकी पत्नी आ रही है। बेगमरशीद ने पहले से ही अपने बहन के घर जाना तय किया है पर रशीद भाई उसे जाने के लिए इन्कार कर देते हैं - "नहीं.....नहीं.....नहीं.....नहीं.....सादिका के यहाँ तुम नहीं जा सकती।.....जिन्दगी में मुझे इतना बड़ा मौका मिला है और तुम उसे यों चौपट कर देना चाहती हो।"[१] पति के इस तरह कहने पर बेगम रशीद उससे झगड़ती नहीं है बल्कि "सादिका को समझाना तुम्हारा काम है।"[२] इतना कहकर चुप हो जाती है। इतनाही नहीं डायरेक्टर कादिर और उनकी पत्नी को उनकीही फिल्म में कहानी लिखने को मिलेगी इस आशापर रशीदभाई अपने घर में रहने के लिए बुलाते हैं तब भी बेगम रशीद उनसे कुछ नहीं कहती बल्कि उनके घर आनेपर भी वह एक समझदार स्त्री की तरह अपना घर छोड़कर पति के साथ शाहबाज के घर पर चली जाती है।

बेगम रशीद का पति की इच्छा के लिए हर बात में किया गया समझौता उसके शिक्षित रूप को प्रकट करता है।

"बड़े खिलाड़ी" की नायिका सुजला वकिल रामध्यान पाराशर साहब की लड़की है। सुजला उन्नीस-बीस वर्ष की शांत स्वभाव की पतली सी शर्मिली लड़की है। लड़के में खराबी होने के कारण सुजला की पहली सगाई टूट चुकी है। फिर दूसरी बार भी उससे बिना पूछे माँ-बाप ने उसकी शादी तय कर दी है। उनके ही घर में किराये पर रहनेवाले 'केवल' नामक लड़के के साथ सुजला का रिश्ता तय किया है। वास्तव में सुजला को यह शादी मंजूर नहीं है। अपनीही शादी की खबर उसे उसकी सहेली तृप्ता से चलती है। तब सुजला रोकर और खाना छोडकर इसका विरोध भी करती है पर मम्मी के सात दिन तक बिना खाये-पिये लेटी रहना और रोना-कलपना देखकर वह इस रिश्ते

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क पैंतरे पृ - ३७

२. - वही - पृ - ३८

के लिए तैयार हो जाती है। पढ़ी-लिखी होकर भी, अपनी इच्छा के विरोध में शादी होते हुए भी सिर्फ अपनी मम्मी की खातिर सुजला शादी के लिए हाँ कर देती है।

आधुनिक समाज में नये-नये साधनों का घर-घर में आना विकसनशीलता का उदाहरण हो सकता है, पर इस विकसनशील समाज में लोगों के मन में बदलाव नहीं आया है। सुजला इसे समझती है। वह इरा से कहती है "मैं सोचती हूँ इरा, जमाना इसलिए नया नहीं कहा जा सकता कि इस सड़ी-मरी गली में भी स्कूटर मोटरसाइकिल और फ्रिज आ गये हैं। घर-घर जाकर देख लो, अब भी हम वही पुराने गुलाम है - छिछोरे, असभ्य, दकियानूसी और कट्टरपंथी! मैं नहीं कहती, हमारे माँ-बाप हमसे प्यार नहीं करते, वो अपनी लड़कियों को मोटरे देते हैं, मकान देते है, फर्निचर और हजारों का दूसरा सामान देते है, वह सब इसीलिए न कि उनकी लाड़ली बेटियों को कोई तकलीफ न हो, वे सुख से रहें। लेकिन वो हजारो रूपये अपनी लाड़लियों के लिए खर्च कर देंगे, बस उन्हें अपने मन का साथी नहीं चुनने देंगे।"[१] नये साधनों के साथ उपरी तौर पर समाज में चाहे परिवर्तन हो पर अंदर से लोगों के मन का परिवर्तन भी होना जरूरी है।

शिक्षित होने से सुजला के विचार कुछ हद-तक सुधारीत है, परंतु रूढ़िबध्द परंपरा को तोड़ने का साहस उसमें नहीं है, इसी कारण खुद पर होनेवाले अन्याय का विरोध नहीं कर पाती है। शिक्षा के कारण उसके व्यवहार में कुछ भी परिवर्तन नहीं दिखाई देता है।

इसप्रकार अश्क के ऊपर उल्लिखित नाटकों की नायिकाएँ शिक्षित दिखाई देती है।

३:१:३ उच्चशिक्षित नायिकाएँ :-

इसमें समाज के ऐसे लोग आते है, जिन्होंने स्नातक तथा स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। अश्क के केवल "भँवर" नाटक की नायिका उच्चशिक्षित दिखाई देती है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क बड़े खिलाड़ी पृ - १२९-३०

"भँवर" की नायिका प्रतिभा २४-२५ वर्ष की युवती है। उसका कद न बहुत लम्बा और न छोटा है। वह दीखने में सुंदर है। एम.ए. हो चुकी है। जब वह एम.ए.में पढ़ती थी तो अपने ही कालेज के दर्शनशास्त्र के अध्यापक प्रो.नीलाभ से उसे प्यार हो गया था परंतु प्रो.नीलाभ ने अपने अध्यापन जीवन के शुरू में अपनीही छात्रा से विवाह किया था मगर अनुभवों की कटुता से वे उस बन्धन से मुक्त हो गये थे। अपनी नारी के प्रति विरक्ति के कारण वे प्रतिभा का प्यार अपना नहीं सके है। नीलाभ के प्यार से निराश प्रतिभा अपनेही एक सहपाठी सुरेश से विवाह करती है पर बौध्दिक असमानता के कारण छः महीने में ही उस बन्धन से मुक्त हो जाती है। प्रतिभा "धनी घर की है, खूब शिक्षित है।"[१] फिर भी जीवन से ऊबी हुई है। उसे फिल्मों से भी नफरत है। वह प्रो.ज्ञान से कहती है " मैं सोच रही थी कि घटिया फिल्में किस तरह हमारे जीवन को खोखला किये दे रही हैं। बड़े से बड़े कट्टरपंथी अपने लड़के-लड़कियों को ये फिल्में दिखाने ले जाता है और जब उसके बच्चे फिल्मी गाने गाते और फिल्मी प्रेम करते हैं तो सदाचार, धर्म और मान-प्रतिष्ठा की तलवारें लेकर उनके सिर-पर जा सवार होता है।"[२] फिल्मों के कारण जीवन कितना बदलता जा रहा है। पहले बच्चों को फिल्में देखने के लिए लेकर जाना और वही फिल्मी प्यार जब बच्चे करते हैं तो धर्म और प्रतिष्ठा सामने दीवार बन जाती है। इसी कारण प्रतिभा को फिल्में देखना अच्छा नहीं लगता है।

अश्क के केवल इसी नाटक की नायिका हमें उच्चशिक्षित नजर आती है। उसके उच्चशिक्षित होने के कारण वह अपने आपको बुध्दिमान समझती है। उसमें ये अहं है कि वह अपने बुध्दि तथा सौंदर्य के बलपर सबको अपनी ओर आकर्षित करती है। इसीकारण वह जीवन की सामान्य बातों से भी नफरत करने लगती है। उसके इस उच्चशिक्षा के कारण उसके स्वभाव में परिवर्तन दिखाई देता है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   भँवर   पृ - १२

२. - वही -   पृ - १०२

३.२ नायिकाओं का स्वरूप : वर्गीय दृष्टिकोण

आधुनिक समाज वर्गों में विभाजीत हो गया है। आज समाज में एक अत्यंत धनी वर्ग है, दूसरा अत्यंत गरीब वर्ग है और इन दोनों के बीच का एक वर्ग है जो ना धनी है और ना गरीब है और वह है मध्यवर्ग। इस स्थिति को ध्यान में रखकर समाज में उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग इस तरह तीन वर्ग प्राप्त होते हैं। "आधुनिक समाज में स्पष्ट रूप से तीन वर्गों की स्थिति दृढ़ से दृढ़तर होती जा रही है अतः आज समाज में स्थित इन तीनों वर्गों को क्रमशः उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग की संज्ञा से अभिहित किया जाना स्वीकार कर लिया गया है।"[१] समाज के तीन वर्गों को ध्यान में रखकर हम अश्क के नाटकों की नायिकाओं को इस तरह वर्गों में बाँट सकते हैं।

३:२:१ उच्चवर्ग की नायिकाएँ -

उच्चवर्ग में अत्यधिक धनी लोगों का समावेश होता है। "उच्चवर्ग में राष्ट्र के सर्वोच्च प्रशासक अथवा अधिकारी तथा राजा, राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री तथा सर्वाधिक धनी उद्योगपतियों को सम्मिलित किया जा सकता है।"[२]

अश्क का "जय-पराजय" नाटक पूर्णतः ऐतिहासिक होने के कारण इस नाटक की नायिका बड़ी रानी उच्चवर्ग में समाविष्ट होती है। जय-पराजय की नायिका बड़ी रानी मेवाड़ के राजा लक्षसिंह की पत्नी है। राजा की पत्नी होने के कारण राजदरबार के अनेक सेवक तथा सेविकायें रानी की सेवा के लिए तत्पर हैं। भारमली नामक नर्तकी भी रानी की सेवा के लिए रखी गई है। धन तथा अन्य सुख-सुविधाएँ उसे प्राप्त हैं परंतु राजा की रानी होने के कारण अनेक समस्याओं से वह जुड़ी हुई है। उसका बड़ा पुत्र चंड अपने कर्तव्य की रक्षा के लिए पिता को मंडोवर की राजकुमारी हंसाबाई से विवाह करने का आग्रह करता है। वास्तव में नारियल मंडोवर से चंड के लिए आया था परंतु महाराज के "युवराज के लिए होगा, हम बुढों के लिए नारियल कौन लायेगा।"[३] कहने से युवराज चंड इस रिश्ते को ना कहता है और पिता को यह शादी करने का आग्रह करता है। पुत्र के इस हठ को रानी सहमती दर्शाती है। उसे अपना कर्तव्य निभाने को कहती है।

---

१. डॉ.विणा गौतम आधुनिक हिंदी नाटको में मध्यवर्गीय चेतना पृ - १८

२. - वही - पृ - १९

३. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - ४६

वास्तव में महाराज की शादी याने उसकी अपनी जिंदगी में सौतन लाना है फिर भी एक राजपुतानी के नाते वह अपना कर्तव्य निभाती है। महाराज की शादी के बाद भी अपने आँसु हँसते-हँसते पी जाती है। राजा की पत्नी होने के कारण बड़ी रानी उच्चवर्ग की नायिका है। उच्चवर्ग में निर्माण होनेवाली विवाह जैसी समस्या को अश्क ने यहाँ दिखाया है।

३:२:२ मध्यवर्ग की नायिकाएँ -

मध्यवर्ग, उच्चवर्ग और निम्नवर्ग की तुलना में बड़ा वर्ग है। "यह आज के अर्थ केंद्रित युग के प्रभाव का परिणाम है कि "मध्यवर्ग" शब्द चर्चा का विषय हो बैठा है। आज यह शब्द सामान्यतः "बीच की श्रेणी या स्तर के लोग जो न अमीर होते हैं, न गरीब" के अर्थ में अधिक प्रचलित है।"[१]

अश्क का "जय-पराजय" यह ऐतिहासिक नाटक छोड़कर अन्य सभी नाटकों की नायिकाएँ मध्यवर्ग में सम्मिलित होती हैं। मध्यवर्ग में भी हम दो भेद कर सकते हैं (१)उच्चमध्यवर्ग (२)सामान्य मध्यवर्ग। अश्क के नाटकों की नायिकाएँ (१)सामान्य मध्यवर्ग और (२)उच्चमध्यवर्ग में आती है।

३:२:३ सामान्य मध्यवर्ग की नायिकाएँ -

"पैंतरे" की नायिका बेगम रशीद बंबई के दो रूम के छोटेसे फ्लैट में अपने पति के साथ रहती है। उस फ्लैट के साथ छोटीसी बाल्कनी भी है। उस बाल्कनी को उन्होंने उठने और गिरनेवाले पर्दे लगाकर एक छोटासा कमरा तैयार किया है।

बेगम रशीद के पति ने डायरेक्टर कादिर और उसकी पत्नी को चाय पर बुलाया है। जब वे दोनों आते हैं तब रशीदभाई उनसे कहते हैं - "अपने खुले ड्रॉइंग-रूम के मुकाबिले में आपको हमारा यह बाल्कनीनुमा-ड्रॉइंगरूम क्या पसन्द आयेगा। हमारे पास दो कमरे हैं और यह बाल्कनी। इसी को हमने बैठक खाना बना लिया है।"[२]

---

१. डॉ.अर्जुन चव्हाण राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन पृ - ७५

२. उपेंद्रनाथ अश्क पैंतरे पृ - ५०

बाल्कनी को ही बेगम रशीद और उसके पति ने ड्राइंग-रूम बना दिया है। अक्सर मध्यवर्गीय परिवार में इसप्रकार का समझौता हमें दिखाई देता है। अश्क ने मकान की समस्या को यहाँ उठाया है।

चाय पर बुलाये गये डायरेक्टर कादिर और उनकी पत्नी को नाश्ता लाने के लिए रशीदभाई अपनी पत्नी से कहते हैं तब डायरेक्टर कादिर बेगम रशीद से कहते हैं "आप काहे तकलीफ करती है, नौकर ले आयेगा।"[१] तब उत्तर में बेगम रशीद उनसे कहती है "अपने घर में हम मालिक भी हैं नौकर भी।"[२] सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में नौकर होते ही नहीं ऐसा भी नहीं। बेगम रशीद के घर में आनी नाम की आया है फिर भी वह खुद नाश्ता लाने में हिचकिचाती नहीं। बेगम रशीद सामान्य मध्यवर्गीय परिवार की ऐसी नायिका है जो निर्माण होनेवाली हर समस्या का हँसते हुए सामना करती है।

"कैद" की अप्पी अपेन पति प्राणनाथ के साथ जम्मू-कश्मीर से अठराह मील की दूरी पर बसे अखनूर के प्राचीन कस्बे में चनाब नदी के किनारे रहती है। उसके पति रेंजर हैं। अप्पी के निम्मो और दीशी नामक दो छोटे बच्चे भी हैं।

दिलीप के आतेही प्राणनाथ उसे कहते हैं "भला दिल्ली और लाहौर के सामने आपको यह अखनूर क्या पसन्द आया होगा और फिर वहाँ के महलों के मुकाबले में हमारा यह घरौंदा!"[३] अप्पी अखनूर जैसे छोटेसे कस्बे में रहती हैं। इसीकारण दिल्ली के घरों के आगे उसका घर बहुत छोटा है।

अप्पी के घर में चनाब नदी का पानी आता है। प्राणनाथ दिलीप के नहाने का प्रबन्ध करने के बारे में अप्पी से जब कहते हैं तब अप्पी दिलीप से कहती है "पानी तो भई यहाँ नदी ही का आता है, तुम्हें कुछ संकोच हो तो कहो। हम तो पीते भी वही हैं, लेकिन तुम्हारे लिए पानी मैंने कुएँ से मँगाया है।"[४] अप्पी और उसके घरवाले

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क पैंतरे पृ - ५२
२. - वही - पृ - ५२
३. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - ५८
४. - वही - पृ - ६१

तो नदी का ही पानी पीते हैं पर दिलीप दिल्ली से वहाँ आया है। उसके लिए अप्पी कुएँ से पानी लाकर रखती है।

शाम के समय में अँधेरा हो जाने पर बत्ती की दोरी काटते और चिमनी को साफ करते-करते अप्पी दिलीप से कहती है "तुम तो बिजली की चकाचौंध के आदी हो, यहाँ तो लालटेनों की रोशनी है।"[१] छोटे से कस्बे में रहने के कारण अप्पी के घर में बिजली नहीं है। अप्पी मध्यवर्गीय परिवार की नायिका है। परिवार में निर्माण होनेवाली ऐसी समस्याओं का हल ढुँढने का प्रयास वह करती है।

"उड़ान" की नायिका माया रंगुन में अपने परिवार के साथ रहती थी पर बमबारी में उसका परिवार नष्ट हो गया है। उन दिनों में उसने मुसीबतों का सामना किया है। जड़ी-बुटियाँ खाकर उसने अपने दिन बिताये हैं। अपने अतीत को याद करते हुए वह रमेश से कहती है - "मैं भी कभी शिकार को पसन्द करती थी। पिताजी के साथ बड़े शौक से शिकार पर जाती थी।"[२] माया सामान्य मध्यवर्गीय परिवार की नायिका है। वह भी कभी शिकार करती थी। सामने निर्माण हुई बुरी स्थिति के कारण उसे अब शिकार से नफरत हो गई है।

अपने साथी मदन के बिछड़ने के बाद वह रमेश और शंकर के साथ रहती है पर मदन के आते ही वह उसके साथ रंगून चली जाना चाहती है। वह रमेश से कहती है "यह ठीक है कि रंगून में हमारा सब कुछ तबाह हो गया, लेकिन देश में हमारे घर हैं, हमारी जमीन है और इस समय जब और सभी नाते टूट गये है, वे हमें बुरी तरह जकडे हुए हैं।"[३] अपने देश में कोई न होते हुए भी माया को अपनी जमीन के प्रति आस्था दिखाई देती है। देश के प्रति प्रेम है। इसी कारण वह मदन के आतेही अपने देश वापस जाना चाहती है। माया ऐसी सामान्य मध्यवर्गीय नायिका है जिसका सब कुछ तबाह हो जाने पर भी अपने देश की जमीन का नाता उसे देश की याद दिलाता है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   कैद   पृ - ८८

२. उपेंद्रनाथ अश्क   उड़ान   पृ - १२२

३. - वही -   पृ - १४८

अश्कजी ने "बड़े खिलाड़ी" की नायिका सुजला के रूप में ऐसी मध्यवर्गीय लड़की का चित्रण किया है, जो शिक्षित होकर भी अपने माँ-बाप का विरोध नहीं कर पाती। आज बहुत से मध्यवर्गीय परिवार में ऐसी घटनाओं को हम देखते हैं कि लड़की शिक्षित होकर भी अपने विचारों को माँ-बाप की मर्जी की खातिर कुर्बान कर देती है। सुजला भी ऐसे ही मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है। उसे बिना पूछे उसकी शादी तय कर दी है। सुजला अपनी मौसेरी बहन इरा से कहती है "रात को मैंने स्वयं अपने कानों से सुना डैडी मम्मी को डाँट रहे थे,"क्यों तुमने नहीं कहा कोई बात नहीं चल रही। क्यों नहीं उसे डाँट दिया कि इन बातों में पड़ने से तुम्हारा क्या मतलब है ? हम जहाँ करेंगे तेरा भला देख कर ही करेंगे।"[१] शादी सुजला की हो रही है और पिता का कहना है कि इन बातों में पडने से तुम्हें कोई मतलब नहीं है। सुजला ऐसे मध्यवर्गीय परिवार में रहती है जहाँ उसे अपना मत प्रकट करने का कोई हक नहीं है।

स्वयं अश्कजी कहते हैं "सुजला तो ज्यादा पढ़ी नहीं है लेकिन मैं एम.ए. और एम.एस.सी. तक पढ़ी हुई लड़कियों को जानता हूँ, स्वयं ऐसी लड़की का पिता हूँ और कुछ का चाचा और जीजा हूँ और माता-पिता की छत्रछाया में पलनेवाली अधिकांश मध्यवर्गीय लड़कियों को मैं आज भी ऐसे ही पाता हूँ।"[२] सुजला ऐसी ही सामान्य मध्यवर्गीय परिवार की नायिका है।

"अलग-अलग रास्ते" की नायिका पं.ताराचन्द की बेटी "रानी ऐसी आधुनिक मध्यवर्गीय नायिका है जिसने अपने पिता के कहने के अनुसार शादी की है। ससुराल के लोगों के तंग करने पर वह अपने पिता के घर वापस आ जाती है पर ये पं ताराचन्द को पसन्द नहीं है।

पिता से डरनेवाली रानी अपने भाई पुरन से कहती है "मैं उस दम घोंटनेवाले वातावरण में किसप्रकार रह सकती थी ? मुझे पिताजी का डर न होता तो मैं कभी की

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क बड़े खिलाड़ी पृ - ६२

२. - वही - पृ - ३१

आ जाती। मुझे भय था, वे मुझे फिर उसी नरक में जाने को कहेंगे। पहली बार जब मैं आयी थी, तो जानते हो उन्होंने कैसे आकाश सिर पर उठा लिया था?"[१] दहेज न लाने के कारण ससुराल में उसे बहुत सताया है इसीकारण वह ससुराल छोड़कर पिता के घर आती है। पं.ताराचन्द उसे कहते हैं "पति जिस हाल में रखे, उसमें रहना चाहिए और ससुराल के दोष गिनने के बदले गुण ढूँढने चाहिए।"[२] रानी ऐसे सामान्य मध्यवर्गीय परिवार की नायिका है जिसे अपने मन से अधिक पिता की सामाजिक प्रतिष्ठा और पति के दोषों के बदले गुण देखने को सिखाया गया है। आज भी अनेक मध्यवर्गीय परिवारों में दहेज के नाम पर बहुओं को सताने की यह कृति सर्वत्र दिखाई देती है।

"स्वर्ग की झलक" की नायिका भाभी लाला गिरधारीलाल की पत्नी है। उसके पति का बूट हाऊस है। देवर रघु प्रसिध्द अंग्रेजी दैनिक के संपादन विभाग में काम करता है। रघु एक बार कम पढ़ी लड़की से शादी करके पछता चुका है। पहली पत्नी के स्वर्गवास के बाद अब दूसरी शादी वह एक अधिक पढ़ी-लिखी आधुनिका से करना चाहता है। भाभी देवर की पसन्द के विरोध में नही है। वह अपने पति से कहती है, "मैं तो फिर यह कहूँगी कि एक बार जुआ खेलकर हम देख चुके हैं, फिर दोबारा....।"[३] पहली पत्नी के साथ उसके रोज झगडे होते थे इसलिए भाभी अब उसके पसन्द की लड़की से उसकी शादी करना चाहती है। प्रो.राजलाल की बेटी उमा बी.ए.में पढ़ती है और नृत्यकला और गाने में भी निपुण है। रघु को उमा पसन्द है। रघु अपने मित्र अशोक के घर दावत के लिए जाता है और उसकी पत्नी का बच्ची के कारण रातभर न सोने की वजह से बीमार होने का नाटक और मि.अशोक का खाना पकाना देखता है। साथही दूसरे मित्र राजेन्द्र की पत्नी का बच्चे के बीमार होते हुए भी पति पर उसकी जिम्मेदारी सौंपकर कन्सर्ट के लिए बाहर जाना देखकर रघु शादी के बारे में अपना इरादा बदल देता है। इधर भाभी रघु के लिए उमा के पिता से बात चलाती

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अलग-अलग रास्ते पृ - ६६
२. - वही - पृ - ६५
३. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - ७४

है। उमा के आधुनिक विचार सुनकर रघु अपनी साली रक्षा से विवाह करने का निश्चय करता है। भाभी उसे कहती है "लेकिन तुम दर्जिन या रसोइन नहीं चाहते...।"[१] तब रघु उँचे स्वर में कहता है "पर मैं संगिनी चाहता हूँ, तितली नहीं।"[२] भाभी देवर की पसन्द से शादी करना चाहती है पर वह आधुनिक फैशनपरस्त लड़कियों से शादी करने का निश्चय करता है। मध्यवर्गीय परिवार में घटनेवाली समस्या का उद्घाटन यहाँ अश्कजी ने किया है। नाटक की नायिका भाभी ऐसे ही परिवार में रहती है और समस्या सुलझाने में सहायक बनती है।

"छठा बेटा" की नायिका माँ प.बसन्तलाल की पत्नी है। पं.बसन्तलाल हालही में रेलवे से रिटायर्ड हो चुके हैं। प्राविडेण्ट फंड का पैसा उन्होंने कुछ ऋण चुकाकर बाकी सब जुए और शराब में उड़ा दिया है। माँ के छः बेटे हैं, उनमें से छठा बेटा कहीं निकल गया है। और बाकी के पाँचों बेटों में से बड़ा बेटा हंसराज डाक्टर है, हरिनाथ कवि है, देवनारायण क्लर्क है, कैलाशपति स्टेशन मास्टर है और गुरूनारायण छात्र है। डॉ.हंसराज के लिये किराये के मकान में सब रहते हैं। एक बड़ी इमारत के भाग में याने तीन कमरे में सब रहते हैं। पं.बसन्तलाल शराबी पिता है। उनका लोगों के साथ बर्ताव भी ठीक नहीं है इसीकारण पाँचो में से कोई भी बेटा उनकी देखभाल करने के लिए तैयार नहीं है। पं.बसन्तलाल जब सोये हुए हैं तब वे एक सपना देखते हैं। सपने में उन्हें लाटरी का टिकट लग जाता है। पैसों के लिए पाँचों बेटे उनकी सेवा करने लग जाते हैं। अंत मे छठा बेटा उनके सपने में आकर उन्हें सांत्वना देता है। उनका सपना टूट जाता है। वे पूर्ववत स्थिति में आ जाते हैं। शराबी पति बसन्तलाल की पत्नी याने नाटक की नायिका माँ बच्चों को समझाते हुए पति का साथ देती है। अश्क ने पिता और पुत्र के एक-दूसरे के प्रति पारिवारिक जिम्मेदारी को मध्यवर्गीय समस्या के रूप में उजागर किया है। नाटक की नायिका अपने बच्चों को भी समझाती है और पति के शराबी और बेपरवाह होते हुए भी उनके सुख-दुःख में शरीक होती है। यहाँ सामान्य मध्यवर्ग

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - १०१

२. - वही - पृ - १०१

की आदर्श पत्नी का रूप हमें माँ में दिखाई देता है।

३:२:४ उच्चमध्यवर्ग की नायिकाएँ -

अश्क के "भँवर" नाटक की नायिका प्रतिभा उच्चमध्यवर्गीय है। वह धनिक है। उसे जीवन की सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं। उसके पापा सरकारी दफ्तर में काम करते हैं। वे हमेशा दफ्तर और फाइलों में उलझे रहते हैं और माँ को लंच और डिनर की चिन्ता रहती है। प्रतिभा की दो छोटी बहने प्रतिमा और प्रमिला हमेशा श्रृंगार प्रसाधनों और सहेलियों में उलझी रहती हैं।

प्रतिभा अपने मन में प्रो.नीलाभ के प्रति उत्पन्न प्रेम को भूला नहीं पाती है। सुरेश के साथ वैवाहिक जीवन में असफलता पाने पर वह अपने माँ-बाप के घर में वापस तो आती है पर उच्चमध्यवर्ग में पली-बढ़ी होने के कारण अन्य पुरूषों से हमेशा मिलती रहती है। अपनी बहनों के मित्रों का भी वह आकर्षण केंद्र बन जाती है। प्रतिभा उसकी बहन का मित्र जगन से कहती है "आप अच्छे समय पर आये, मैं स्वयं ऊबी-ऊबी महसूस कर रही थी।"[१] जब जगन उसे कॉफी हाऊस चलने के लिए कहता है तो वह जल्दही हाँ कर देती है। प्रतिभा अपने आपको अति बुध्दिवादी समझती है। वह हर एक पुरूष को अपने सौंदर्य और बुध्दि के बल पर अपनी ओर आकर्षित करती है पर जल्दही उनसे उकता भी जाती है। अपने आस-पास उसे सब-कुछ खोखला लगता है। उसे सामान्य लोगों का हर वक्त एक चीज में कष्ट करते रहना अच्छा नहीं लगता। "उसे खीझ होती है कि क्यों वे उसमें से बाहर निकलने की कोशिश नहीं करते - क्यों उनमें उच्च, उत्ताल, उद्‌दाम जिन्दगी के लिए कोई इच्छा और संघर्ष नहीं।"[२]

उच्चमध्यवर्ग में पली-बढ़ी होने के कारण उसमें सामान्यता से नफरत है। वह अपने आप को सबसे अलग दिखाना चाहती है पर वास्तविकता यह है कि उसी में जीती है। अश्क ने भँवर में प्रतिभा के द्वारा उच्चमध्यवर्ग की बुध्दिवादी युवती की कुंठाओं का चित्रण किया है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ - ८०
२. - वही - पृ - १५

"अंजोदीदी" की नायिका अंजली के पति इन्द्रनारायण को दहेज में कोठी मिली है परंतु वह अंजोदीदी के नाम से प्रसिद्ध होने के कारण वह अंजो की ही कोठी कही जाती है। यह कोठी वर्षों पहले किसी अंग्रेज इंजीनियर ने बनवायी थी। अंजो के पति वकिल हैं। उनके घर में दो-तीन नौकर हैं। अंजो उच्चमध्यवर्ग की ऐसी नारी है जिसे विरासत में संपत्ति के साथ-साथ कुछ ऐसे संस्कार भी मिले हैं जिन्हें वह जबरदस्ती दूसरों पर लादना चाहती है। घर के लोगों का दैनिक जीवन अंजो के संकेत पर चलता है। अंजो के पति उसके शिकंजे में बुरी तरह जकडे हैं। वे कहते हैं "सौगंध ले लो जो पिछ्ले छः बरस में चाट को मुँह भी लगाया हो।"[१]

अंजो ने केवल पति के ही नहीं बल्कि उसका बेटा नीरज, जो सिर्फ ग्यारह बरस का है,उसके मन पर भी अपने विचारों का प्रभाव डाला है। उसके पढ़ने का, खाने का, खेलने का समय अंजो ने ही तय किया है। उसे क्रिकेट खेलने में अधिक दिलचस्पी है परंतु अंजो उसे डिप्टी कमिश्नर बनाना चाहती है।

वक्त की पाबन्दी, नियमबध्दता, सफाई ये चीजे बुरी नहीं हैं पर प्रत्येक व्यक्ति में उसका संतुलन होना आवश्यक है। अंजो के इस सनक का पूरे घर पर प्रभाव दिखाई देता है। अश्क ने अंजो के माध्यम से उच्चमध्यवर्ग की महिलाओं में स्थित अतिरिक्त अनुशासन प्रियता तथा शिष्टाचार की समस्या को यहाँ उठाया है।

३.३ नायिकाओं का स्वरूप : आर्थिक दृष्टिकोण

आर्थिक दृष्टि से देखा जाये तो अश्क के नाटकों की नायिकाएँ ज्यादातर घर-परिवार संभालनेवाली, शादी-शुदा ही दिखाई देती हैं। नौकरी करनेवाली नायिका सिर्फ "बड़े खिलाड़ी" में दिखाई देती है। "भँवर" की प्रतिभा उच्चशिक्षित होकर भी परावलंबी नजर आती है तो 'उड़ान' की माया और "अलग-अलग रास्ते" की रानी शुरू में परावलंबी होकर अंत में विद्रोह कर स्वावलंबी हो जाती हैं। अश्क के नाटकों की नायिकाओं को

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क भँवर पृ - ६१

आर्थिक दृष्टि से हम इसप्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं -

(१) घर - परिवार संभालनेवाली नायिकाएँ।

(२) नौकरी करनेवाली नायिकाएँ।

(३) परावलंबी नायिकाएँ।

(४) स्वावलंबी नायिकाएँ।

३:३:१ <u>घर-परिवार संभालनेवाली नायिकाएँ</u> -

पैंतरे की नायिका बेगम रशीद केवल घर-परिवार संभालनेवाली है। उसे किसी और चीज में ज्यादा दिलचस्पी नहीं है। फिल्मों में कहानी लिखने की वजह से उसके पति को फिल्मों से बहुत लगाव है। बेगम रशीद डायरेक्टर कादिर को नहीं जानती ये सुनकर रशीद भाई उसे कहते हैं "मैं फिल्मी दुनिया में नाम पाना चाहता हूँ - और मेरी बीवी को फिल्मी दुनिया से छत्तीस का भी नाता नहीं। लोगों की बिवियाँ हैं कि घर में रहते हुए भी दुनिया जहान की खबर रखती हैं।"[१] बेगम रशीद को जितनी घर के कामों में दिलचस्पी हैं उतनी फिल्मों में नहीं है।

चाय पर बुलाये हुए कादिर साहब को रशीद भाई अपनी पत्नी की तारीफ करते हुए कहते हैं "रशीद बेगम को खुद काम करने का बड़ा शौक है। शामी कबाब, मछली के कबाब सब कुछ इन्होंने खुद पकाया है और सच मानिए कादिर साहब, मेरी इस तन्दुरूस्ती और मेहनत का राज रशीद बेगम के इस सलीके और सुघड़ता में है। मैं रात-रात काम करता हूँ, सुबह आता हूँ, तो हर चीज मुझे तैयार मिलती है। इनको फिल्मों से कोई मतलब नहीं है, मुझसे मतलब है।"[२] बेगम रशीद घर-परिवार संभालनेवाली एक सामान्य जीवन जी रही औरत है जिसे पति के काम से ज्यादा पति से मतलब है।

"जय-पराजय" की नायिका बड़ी रानी महाराज लक्षसिंह की पत्नी है। उसकी सेवा के लिए अनेक सेवक-सेविकाएँ हैं। वह अपने बच्चों के प्रति अपना कर्तव्य निभाती

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क पैंतरे पृ - ३१

२. - वही - पृ - ५२

है। उसकी बेटी हेमलता की शादी हो चुकी है और वह अपने राज्य से पिता के घर आयी हुई है। महाराज से बातें करते वक्त रानी को हेमलता की याद आती है। वह महाराज से कहती है "हेमलता को अपने राज्य से आये कई दिन हो गये, मैं उससे उधर का हाल भी न पूछ सकी। कुछ ही दिन तो रहेगी वह, मैं चलती हूँ।"[१] रानी होने के नाते वह राज्य के साथ-साथ अपने माँ होने का कर्तव्य निभाती है। स्पष्ट है कि उसे घर-परिवार के प्रति आस्था है।

"कैद" की नायिका अप्पी एक शादी-शुदा नारी है। उसके दीशी नामक बेटा और निम्मो नामक एक लड़की है। बच्चों के मैले कपडे देखकर वह दीशी से कहती है "जा भी कमबख्त जा, जा बेटा, तेरे अंकल आयेंगे तो तुझे इसतरह मैले कपड़े पहने देखकर नाराज होंगे और मिठाई न देंगे। जा....जा....मेरा राजा बेटा....।"[२] दिलीप आनेवाला है, इसिलिए अप्पी बच्चों को तैयार कर रही है। जब दीशी मैले कपडे बदलने के लिए ना करता है तो अप्पी उसे समझाकर ठीक करती है।

दीशी और निम्मो गुड़िया की खातिर लड़ रहे हैं। निम्मो अपनी माँ से दीशी की शिकायत करती है तब अप्पी उसे कहती है "गुडिया छीन ली थी तो मुझ से कहती, यह क्या कि घौल-घप्पा शुरू कर दिया।"[३] अप्पी गुड़िया के लिए लड़नेवाले बच्चों को प्यार से समझाती है। इसतरह वह अपने परिवार की जिम्मेदारी संभालनेवाली नारी है।

"अंजोदीदी" की नायिका अंजली अपनी गृहस्थी में पूरी निष्ठा और गंभीरता से जुटी हुई है। उसके पेहरावे की सुरूचि, स्वच्छता और उसके व्यक्तित्व में हमें सजगता और जागरूकता दिखाई देती है। उसका घर एकदम साफ-सुथरा है। केवल नौकरों पर सफाई निर्भर नहीं है बल्कि अंजो स्वयं प्रत्येक काम में दिलचस्पी लेती है। घर की प्रत्येक वस्तु साफ और स्वच्छ है। उसके घर में कही भी धब्बा, जाला या धूल नहीं दिखाई

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - २९
२. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - ५०
३. - वही - पृ - ५१

देती है "नीरज बेटा, कपडे बदल लिय तुमने ?"[१] आगे वह यह भी कहती है "और अपने पापा से कहो, नहाकर सीधे इधर आयें। नाश्ता कर लें, फिर चाहे जो करते रहे। तौलिया उनका टॉवल-स्टैंड पर पड़ा है और कपड़े पलंग पर रखे हैं। अभी तक स्नान नहीं किया और आठ बजने को आये हैं।"[२] अंजो को घर का, घर के लोगों की सफाई का और समय का बहुत ध्यान है। परिवार के हर व्यक्ति से वह समय पर सब कुछ करवाती है।

अंजो की सफाई और समय-निष्ठा देखकर उसकी सहेली अन्नो चकित रह जाती है तब अंजो उसे कहती है "कहीं तुम पहले आकर देखतीं - घर भूतों का डेरा बना हुआ था। इतना बड़ा मकान यह भी तो पता न चलता था कि कौन सा कमरा खाने का है, कौन सा सोने का और कौनसा उठने बैठने का। सभी जगह चारपाइयाँ, कपड़े और बर्तन बिखरे रहते थे।"[३] अंजो को अपने घर से इतना प्यार है कि वह घर की हर एक चीज में पूरी निष्ठा से काम करती है। बेपरवाही से पडनेवाली हर वस्तु को शादी के बाद अंजो ने अपनी जगह सजाया है। अपनी गृहनिष्ठा से अपने तन-मन से वह परिवार में जुटी हुई दिखाई देती है।

"स्वर्ग की झलक" की नायिका भाभी चार बच्चों की माँ है। अपने घर को संभालते हुए उसने शिक्षा प्राप्त की है। नौकर के होते हुए भी घर का बहुत सा काम वह खुद करती है। दिनभर रसोई, सफाई, बच्चों को खिलाना-पिलाना और मनाने के काम में रहती है। रात के वक्त खाना-खाकर वह कोई पुस्तक भी पढ़ना चाहती है मगर "बच्चे को सुलाते-सुलाते स्वयं भी सो जाती है।"[४] पति, देवर, उसकी बेटी और अपने चार बच्चों में वह इतनी उलझी हुई है कि किताब पढ़ना चाहते हुए भी पढ़ने का समय उसे नहीं मिलता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि भाभी को घर-परिवार के प्रति आस्था है।

"छठा बेटा" की नायिका माँ अपने पति के शराबी होते हुए भी अपने

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अंजोदीदी पृ - ५२
२. - वही - पृ - ५२
३. - वही - पृ - ५३
४. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - ७२

परिवार को संभालती आयी है। पति का बेपरवाह रहना और बच्चों के साथ झगडना जैसे दुःखों को वह झेलती आयी है। उसका बेटा गुरूनारायण अभी कॉलेज का छात्र है। उसे कालेज जाने के लिए देर हो रही है और खाना अभी तैयार नहीं है। गुरूनारायण माँ को खाने के बारे में पूछता है तब माँ उसे उत्तर देती है "हमारी ओर से तो बेटा कोई देर नहीं। सब्जी तो बस तैयार है, आटा खत्म हो गया था.....।"[१] माँ को घर और बच्चों के प्रति प्रेम है। बच्चों को समय पर सब-कुछ देने का कर्तव्य वह निभाती है।

पाँचों बच्चों में किसी की भी पिता बसन्तलाल के साथ पटती नहीं है। बसन्तलाल के मित्र बच्चों को समझाने का प्रयत्न करते हैं पर कोई भी उन्हें साथ रखने के लए राजी नहीं है। कैलाश पुरानी बातों को निकालता है। वह अपने भाई हंसराज से कहता है "आप भूल सकते हैं। वे सब बातें मैं नहीं भूल सकता। याद है आपको, उस दिन उनकी कितनी ज्यादती थी। घर में खाने को नहीं था और वे बीस रूपये - जो माँ उधार लायी - किसी श्रेष्ठ व्यक्ति को दे आये थे।"[२] पति के शराबी और बेपरवाह होने के कारण पति की जिम्मेदारी माँ खुद निभाती है। वक्त पड़ने पर दूसरें से पैसे उधार लाकर वह अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है। उसके इस तरह जिम्मेदारी निभाने से उसका घर और बच्चों के प्रति प्रेम तथा कर्तव्य नजर आता है।

इसप्रकार अश्क के ज्यादातर नाटकों की नायिकाएँ घर-परिवार संभालनेवाली है।

३:३:२ नौकरी करनेवाली नायिकाएँ -

"बड़े खिलाड़ी" की नायिका सुजला ने कुछ वर्ष सिखने के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी पर जब उसे पता चलता है कि जिसके साथ उसकी शादी होनेवाली है उसका पति सिर्फ ढ़ाई सौ रूपये कमाता है और इस मँहगाई में उन रूपयों से घर नहीं चल

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क छठा बेटा पृ - ३३

२. - वही - पृ - ४०

सकेगा तब वह आगे पढ़कर नौकरी करने लगती है। वह इरा से कहती है "मैं तो सच पढ़ाई छोड़ बैठी थी, पर जब यह बात पक्की हुई, मैंने बेसिक ट्रेनिंग पूरी की और स्कूल में नौकरी कर ली।"[१]

जब इरा सुजला से पूछती है "नौकरी क्या तुम छोड़ दोगी ?" [२] तब सुजला उसे कहती है कि मैं करना चाहूँ तो उन्हें एतराज नहीं होगा।....लेकिन बिना मेरे नौकरी किये चलेगा कैसे ? उनकी बहन तो चाहती है, मैं बी.ए., बी.टी. कर लूँ, ताकि मैं बेहतर नौकरी कर सकूँ।"[३] सुजला कमानेवाली नायिका है मगर अपनी मर्जी के खिलाफ शादी होते हुए भी अपने विचारें को सशक्त रूप में सबके सामने रखने में कमजोर नजर आती है।

३:३:३ <u>परावलंबी नायिका</u> -

"भँवर" की नायिका प्रतिभा हमें परावलंबी नजर आती है। वह उच्चशिक्षित है मगर नौकरी नहीं करती है। वह एक बार शादी कर चुकी है पर पति सुरेश से बौध्दिक असमानता के कारण छः महीने में ही अलग हो गई है। अलग होकर वह अपने पिता के घर में वापस आती है। वह उच्चमध्यवर्गीय नायिका है। उसे जीवन की सब सुख-सुविधाएँ प्राप्त हैं। शुरू से अंत तक वह प्रो.नीलाभ के प्रेम की मानसिक कुंठा में जलती हुई नजर आती है। आर्थिक दृष्टि से देखा जाये तो प्रतिभा परावलंबी है। वह पिता के घर में बिना नौकरी किये रहती हुई दिखाई देती है।

३:३:४ <u>स्वावलंबी नायिकाएँ</u> -

"अलग-अलग रास्ते" की नायिका रानी अपने परिवार की प्रतिष्ठा के लिए अपना जीवन दाँव पर लगाना नहीं चाहती है। पति त्रिलोक तथा उसके सास-ससूर और

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क बड़े खिलाड़ी पृ - ६५
२. - वही - पृ - ४७
३. - वही - पृ - ४७

ससुराल के अन्य सदस्यों ने दहेज के लिए उसे बहुत सताया है इसिलिए वह पिता के घर आयी है। रूढि-परंपरा को माननेवाले पिता ताराचन्द उसे एक साल बाद लेने के लिए आनेवाले पति के साथ जाने के लिए कहते हैं। त्रिलोक को जब रानी के पिता से मोटर और कार दोनों मिल जाने का आश्वासन मिलता है तो वह रानी को लेने के लिए आ जाता है पर पिता के घर में रहनेवाली रानी पिता से कहती है " न मैं उनका घर चाहती हूँ न आपका मकान! "[१] वह त्रिलोक के साथ जाने के लिए इन्कार कर देती है। ताराचन्द भी उसे अपने घर से बाहर जाने के लिए कहते हैं। तब रानी चिढ़कर कहती है "जहाँ सींग समायेंगे, चली जाऊँगी, किन्तु इस घर में एक पल भी न रहूँगी। "[२]

अंत में पिता की सामाजिक प्रतिष्ठा और परंपरा को न मानते हुए वह उस घर से बाहर निकल जाती है। अपनी कॉलिज की पढ़ाई पूरी कर वह नौकरी करती है और अपने अस्तित्व की पहचान देती है। शुरू में परावलंबी रानी अंत में विद्रोह कर स्वावलंबी बन जाती है।

"उड़ान" की माया आपत्तिकाल में अपने साथी मदन से बिछड़कर रमेश और शंकर का सहारा लेकर उनके कैम्प में रहने लगती है। शंकर एक शिकारी है। वह उसे बुरी नजरों से देखता है और रमेश उसे देवी मानकर उसकी पूजा करता है। मदन को चाहनेवाली माया उसके आने की प्रतिक्षा में दिन काटती है। उसके आने के बाद माया मदन के साथ जाना चाहती है मगर मदन उसपर संदेह करता है। माया को अच्छी देखकर मदन के मन में जो शक पैदा होता है वह माया के समझाने पर भी दूर नहीं होता। माया उसके साथ रास्ते की जड़ी-बुटियाँ खाकर भी रहने के लिए तैयार है। उसकेही इंतजार में वह अब तक रमेश और शंकर के कैम्प में ठहरी हुई थी। वह समझ जाती है कि कितना भी प्रयत्न करने पर मदन का संदेह दूर नहीं हो सकता। वह पुरूष की दासी बनकर जीना नहीं चाहती है। वह स्पष्ट शब्दों में कहती है "आप लोगों ने मुझे समझा क्या है ? आपने समझा कि मैं कोई नीच, तुच्छ, बाजारी कुत्तियाँ हूँ कि चन्द

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अलग-अलग रास्ते पृ - १२२

२. - वही - पृ - १२५

टुकडों के लिए दुम हिलाती हुई मैं आपके पैरों में लौटती रहूँगी।"[१] माया केवल आसरे के लिए उनके पैरों पर सिर झुकाकर नहीं रहना चाहती। उसमें इतनी इच्छाशक्ति है कि अपनी मंजिल वह खुद चुन सकती है। वह पुरूष की दासी नहीं संगिनी बनकर रहना चाहती है। वह तीनों को भी छोडकर अपने मार्ग पर अकेली चली जाती है। शुरू में तीनों के सहारे जीनेवाली माया अंत में स्वावलंबी बनकर अकेली निकल जाती है। वह अपने देश रंगुन में जाकर नौकरी कर अकेली रहती है।

३:३:५ निष्कर्ष -

उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं का शैक्षिक, वर्गीय और आर्थिक दृष्टि से विभाजन तथा विवेचन के बाद निष्कर्ष रूप में यह पता चलता है कि शैक्षिक दृष्टि से शिक्षित और उच्चशिक्षित नायिकाओं में कुछ ऐसी शिक्षित नायिकाएँ है जो शिक्षा के प्रभाव के कारण सामंजस्य स्थापित कर परिवार में उत्पन्न समस्या सुलझाने का प्रयास करती हैं। कुछ नायिकाएँ अपने साथ होनेवाले अन्याय का विरोध कर विद्रोह कर उठती हैं। साथही कुछ नायिकाएँ ऐसी भी है जो शिक्षित होकर भी सामाजिक परंपरा का विरोध करने में असमर्थ दिखाई देती हैं। भँवर की नायिका उच्चशिक्षित होने के कारण अपने आपको बुध्दिवादी समझती है अतः उसमें अहं दिखाई देता है। शिक्षा के कारण नायिकाओं के स्वरूप में अलग-अलग परिवर्तन दिखाई देते है। वर्गीय और आर्थिक दृष्टि से देखा जाये तो सामान्य मध्यवर्ग की कुछ ऐसी नायिकाएँ है जो केवल घर-परिवार संभालती हैं और परिवार में निर्माण समस्या का समझौते के साथ सामना कर अपना कर्तव्य निभाती हैं। मध्यवर्ग ऐसा वर्ग है जो समाज की लांछना से डरकर भी रहता है और गलत धारणाओं के प्रति लड़ता है तो विद्रोह किये बिना भी रहता नहीं है। मध्यवर्ग की कुछ ऐसी नायिकाएँ भी है जो अन्याय का विरोध कर स्वावलंबी बनकर निकल जाती हैं। बड़े खिलाड़ी की सुजला जो नौकरी करनेवाली आर्थिक दृष्टि से ठीक होते हुए भी परिस्थिति से संघर्ष नहीं कर पाती । प्रतिभा उच्चशिक्षित होकर भी परावलंबी है। अश्क के नाटकों की नायिकाओं का स्वरूप इसप्रकार स्पष्ट होता है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क उड़ान पृ - १३४-३५

: चौथा अध्याय :

"उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं का पारिवारिक जीवन"

४.१ परिवार का स्वरूप -

समाज में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार समाज की सार्वभौम संस्था है। परिवार के बिना मनुष्य का जीना मुश्किल है। अपनी आवश्यकताओं को देखकर मानवजाति ने सामाजिक विश्वास, विचार और रीति-रिवाजों के नुसार संस्थाओं का निर्माण किया है, उसी संस्था में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान आता है। मनुष्य परिवार में जन्म लेता है। उसके सामाजिक संबंधो का विकास परिवार में ही होता है। आगे राष्ट्र के उत्थान तथा पतन में परिवार एवं समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, उसीप्रकार राष्ट्र का विकास भी परिवार तथा समाज के विकास पर आधारित होता है परिवार पर समाज और समाज पर राष्ट्र आधारित है।

साहित्य से भी परिवार तथा उसकी भावनाओं का घनिष्ठ संबंध आता है। नाटक साहित्य के द्वारा भी लेखक जीवन की विभीन्न समस्याओं को दिखा सकता है। पूरे विश्व में हमें परिवार संस्था दिखाई देती है। मनुष्य का सामाजिक, आर्थिक और मानसिक विकास परिवार के बिना मुश्किल है।

४.२ परिवार की परिभाषा -

परिवार की उत्पत्ति के अनेक कारण हैं। मनुष्य की बहुतसी आवश्यकताओं का परिणाम यह हैं कि उसके द्वारा परिवार का निर्माण हो गया है।
"हिन्दी विश्वकोश" के नुसार परिवार याने "एक ही कुल में उत्पन्न और परस्पर घनिष्ठ संबंध रखनेवाले मनुष्यों का समुदाय, परिजनसमूह, कुटुम्ब।"[१]

---

१. सं.नगेन्द्रनाथ वसु हिन्दी विश्वकोश पृ - ७४

"मानक हिंदी कोश" के अनुसार परिवार याने -

(अ) " एक ही पूर्व पुरूष के वंशज या

(ब) एक ही घर में और विशेषतः एक कर्ता के अधीन या संरक्षण में रहनेवाले लोग।"[१]

"हिंदी शब्दसागर" में परिवार की परिभाषा इस तरह दी है. परिवार याने "एक ही कुल में उत्पन्न और परस्पर घनिष्ठ संबंध रखनेवाले मनुष्यों का समुदाय या स्वजनों या आत्मीयों का समुदाय।"[२]

"हिंदी विश्वकोश" के नुसार "परिवार साधारण तथा पति-पत्नी और बच्चों के समूह को कहते हैं, किन्तु दुनिया के अधिकांश भागों में वह सम्मिलित वासवालें रक्तसंबंधियों का समूह है जिसमें विवाह और दत्तक प्रथाद्वारा स्वीकृत व्यक्ति भी सम्मिलित है। सभी समाजों में बच्चों का जन्म और पालन-पोषण परिवार में होता है। बच्चों का संस्कार करने और समाज के आचार-व्यवहार से उन्हें दीक्षित करने का काम मुख्यरूप से परिवार में होता है। इसके द्वारा समाज की सांस्कृतिक विरासत एक से दूसरी पीढ़ी को हंस्तातरित होती है। व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा बहुत कुछ परिवार से ही निर्धारित होती है। नर-नारी के यौन सम्बन्ध मुख्यतः परिवार के दायरे में निबध्द होते हैं।"[३]

इस तरह परिवार की बुनियाद व्यक्ति है। अपने निकट रिश्ते के मनुष्यों का समूह ही परिवार है। माँ-बाप, भाई-बहन, पति-पत्नी, बच्चे आदि से परिवार बनता है।

४.३ भारतीय समाज में परिवार का स्थान -

परिवार निकटतम रक्तसंबंधियों का समुदाय है। भारतीय समाज का परिवार के प्रति गंभीर दृष्टिकोण दिखाई देता है। परिवार-संस्था का उद्‌गमही मानव की सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं का फलस्वरूप है। परिवार भारतीय समाज का प्राण है। जन्मतः मनुष्य सामाजिकता से परिचित नहीं होता है। उसे सुसंस्कृत बनाने में परिवार के

१.रामचन्द्र वर्मा मानक हिंदी कोश पृ - ४२७

२.श्याम सुंदरदास हिंदी शब्दसागर पृ - २८६४

३.नगेन्द्रनाथ वसु हिंदी विश्वकोश पृ - ११७

सभी सदस्यों का सहभाग होता है। माता-पिता, भाई-बहन आदि सभी सदस्य व्यक्ति को सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचार प्रदान करते हैं। व्यक्ति समाज में जन्म लेता है। बचपन, यौवन और बुढ़ापे की अवस्था से गुजरते हुए वह समाप्त भी हो जाता है परंतु उसके परिवार में वंशपरम्परागत संतानक्रम आगे चलता रहता है। भारतवासियों ने इस परम्परा को प्राचीन काल से स्वीकार किया है।

भारतीय समाज में परिवार के सभी सदस्य एक ही घर में रहते हैं। वे पारिवारिक भावना के स्तर पर एक-दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं। उनकी रूढ़ियाँ, विचार, व्यवहार आदि में समानता दिखाई देती है। परिवार के सदस्यों में एक दूसरे के प्रति आत्मत्याग की भावना होती है। मनुष्य को सामाजिक रीति-रिवाज तथा परम्पराओं की शिक्षा देने में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान होता है। परिवार ही मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माता है। परिवार की उन्नति पर ही समाज का निर्माण होता है, इसलिए भारतीय समाज में परिवार को महत्वपूर्ण स्थान है।

भारतीय समाज में प्राचीनकाल में मातृसत्ताक, पितृसत्ताक परिवार होते थे। साथही संयुक्त परिवार बड़ी संस्था में दिखाई देते थे। जिसतरह उद्योग बढ़ने लगे नागरीकरण होता गया तब से आधुनिक समाज में संयुक्त परिवार के साथ एकल परिवारों की संख्या बढ़ने लगी। आजकल समाज में संयुक्त और एकल परिवार अधिक दिखाई देते हैं।

४:३:१ संयुक्त परिवार -

संयुक्त परिवार में बहुत से सदस्य एक साथ रहते हैं। परिवार का बुजुर्ग याने कर्ता परिवार की आर्थिक व्यवस्था देखता है, झगडों को निपटाता है एवं स्नेहभाव बनाये रखता है। संयुक्त परिवार में परिवार के नियमों के अनुसार सदस्यों को चलना पडता है। संयुक्त परिवार के संबंध में महेन्द्रकुमार जैन ठीक ही लिखते हैं "हम उस परिवार को संयुक्त परिवार कहते हैं जिसमें मूल परिवार से अधिक पीढियों के सदस्य सम्मिलित हो तथा उनके सदस्य एक-दूसरे से सम्पत्ति आय तथा पारस्पारिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के द्वारा सम्बन्धित हो।"[१]

---

१. महेन्द्रकुमार जैन हिन्दी उपन्यासों में परिवारिक चित्रण पृ - १८

४:३:२ एकल परिवार -

यह परिवार छोटा होता है। इसमें पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे होते हैं। पति-पत्नी निःसन्तान होनेपर दत्तकपुत्र उस परिवार का सदस्य हो सकता है। आधुनिक युग में संयुक्त परिवारों के विघटन के परिणामस्वरूप एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही हैं।

४.४ अश्क के नाटकों की नायिकाओं के परिवार -

भारतीय समाजव्यवस्था में आज हमें जिसप्रकार संयुक्त और एकल परिवार भी दिखाई देते हैं उसीप्रकार अश्क के नाटकों की नायिकाओं के परिवार दिखाई देते हैं। आधुनिक समाज में हम जिसे परिवार कहते हैं उसकी सीमा में केवल पति-पत्नी और उनके बालक रहते हैं। लेकिन कुछ समय पूर्व तक परिवार का अर्थ एक ऐसा कुटुंब था जिसमें पति-पत्नी, माँ-बाप, जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी उनके बच्चे, पुत्रों की वधुएँ, उनके बच्चे आदि सभी मिल-जुलकर एक छत के नीचे एक ही घर में रहते हैं। ऐसे परिवार को संयुक्त परिवार कहा जाता है। यांत्रिक युग के कारण सामाजिक और आर्थिक स्थिति में बदलाव आ गया, फलतः एकल परिवार का उगम हुआ।

अश्क के नाटक आज के समाज का प्रतिबिंबित रूप होने से उनके नाटकों के परिवार संयुक्त और आर्थिक दृष्टि से योग्य होते हुए भी अधिक समस्याग्रस्त एकल परिवार दिखाई देते हैं। यहाँ हम इनका विवेचन आवश्यक मानते हैं -

४:४:१ संयुक्त परिवार -

कुछ समय पूर्वतक संयुक्त परिवारों की संख्या अधिक थी लेकिन आज हमें इनका विघटित रूप दिखाई देता है। संयुक्त परिवारों का होना जिसप्रकार लाभदायक साबित होता है उसीप्रकार मनुष्य के वैयक्तिक विकास के लिए वह बाधा भी उत्पन्न करता है।

अश्क के "स्वर्ग की झलक" नाटक में लाला गिरधारीलाल के परिवार में उनकी पत्नी, बच्चे, उनका छोटा भाई रघु और उसकी एक छोटी बच्ची है। माँ के स्वर्गवास

के बाद गिरधारीलाल और उनकी पत्नी याने नाटक की नायिका भाभी बड़ी जिम्मेदारी से रघु को बड़ा करते हैं। उसे माँ की कमी कभी महसूस नहीं होने देते हैं। रघु की पहली पत्नी के देहान्त के बाद उसकी छोटी बच्ची को संभालना भी उनके जिम्मे आ जाता है। संयुक्त परिवार में रहने के कारण ही रघु इन समस्याओं को बिना तकलिफ सह सकता है। जब वह दूसरी बार आधुनिक, ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की से शादी करना चाहता है तो उसके बड़े भाई पुराने विचारों के होकर भी पत्नी के कहने पर और भाई की इच्छा की खातिर उस शादी के लिए हाँ कर देते हैं। रघु अपने भैया और भाभी के स्नेहपूर्ण छत्र के आधारपर ही अपनी समस्याओं को सुलझा सकता है। केवल संयुक्त परिवार में रहने के कारण ही यह सब कुछ संभव होता है।

"बड़े खिलाड़ी" में भी संयुक्त परिवार है। रामध्यान और योगध्यान पाराशर ये दो बड़े भाई हैं । रामध्यान के दो बेटे और एक बेटी है और योगध्यान के एक बेटी है। वकील रामध्यान की बेटी सुजला की शादी इस संयुक्त परिवार में एक समस्या उत्पन्न कर देती है।

संयुक्त परिवार में बड़ी होने से सुजला के मनपर रूढ़ि-परंपराओं का इसप्रकार असर हुआ है कि उसकी शादी उसकी मर्जी के खिलाफ होते हुए भी वह मुँह से उफ् तक नहीं करती है। संयुक्त परिवारों में सदस्यों की संख्या बहुत होने से और घर के बुजुर्ग मुखिया का कहना मानने की परम्परा होने के कारण घर के बच्चे भी किसी बात का विरोध नहीं कर पाते है। सुजला जानती है कि ये शादी कर के वह सुखी नहीं हो पायेंगी फिर भी सिर्फ माता-पिता के लिए वह अपना बलिदान देने के लिए तैयार होती है। परिवार के अन्य सदस्य याने सुजला के भाई और चाचा-चाची भी इस रिश्ते से संतुष्ट नहीं हैं पर वे भी इसका विरोध नहीं कर पाते हैं। संयुक्त परिवार में बड़ी हुई सुजला अपना वैयक्तिक फैसला करने में असमर्थ दिखाई देती है। रूढ़ि-परंपराओं की मान्यता संयुक्त परिवार में ज्यादा रूप में दिखाई देती है। जिसका परिणाम सुजला के वैयक्तिक विकास में बाधा डालता है। परिवार के अन्य सदस्य भी इसी प्रकार अपना मत प्रकट करने में असमर्थ दिखाई देते हैं।

४:४:२ एकल परिवार -

आज के बढ़ते औदयोगीकरण से संयुक्त परिवारों का विघटन होकर एकल परिवारों की संख्या बढ़ने लगी है। एकल परिवार में केवल पति-पत्नी और उनके बच्चे, इतने कम सदस्यों का परिवार होने से उस परिवार में कोई समस्या पैदा होती ही नहीं ऐसा नहीं। अश्क के नाटकों के एकल परिवारों में भी कोई न कोई समस्या दिखाई देती है।

"कैद" में अप्पी अपने छोटेसे परिवार में भी सुखी नहीं है। उसके पति प्राणनाथ धन और प्रतिष्ठा से युक्त हैं। वे अप्पी के प्रति निष्ठावान बनने का भी प्रयत्न करते हैं। अप्पी अपने पूर्व जीवन में दिलीप से किये गये प्यार को भूला नहीं पाती है। उसके परिवार में पति के साथ-साथ दो छोटे बच्चे भी हैं पर अप्पी अपने अतीत में इतनी खोयी रहती है कि अपने प्यारे बच्चों को भी स्नेह नहीं दे पाती है। पति उसे बदलने का प्रयत्न भी करते हैं परंतु अप्पी नहीं बदल पाती है। अप्पी के जीवन में उत्पन्न वैवाहिक विषमता के कारण "कैद"का पूरा परिवार केवल समझौते पर अपनी जिंदगी जीता है।

अश्क के "अलग-अलग रास्ते" नाटक के परिवार के मुख्य कर्ता पं.ताराचन्द ने अपनी दोनों बेटियों की शादी करा दी थी पर उनके विवाह के उपरान्त किसी न किसी समस्या के कारण अपने पिता के घर आयी हुई है। पं.ताराचन्द सदैव अपनी शान की बात करते हैं। रानी की शादी ताराचन्द त्रिलोक से इसलिए करते हैं कि उसके पिता रायबहादुर हैं उनके पास खासी अच्छी जायदाद है। "वे अपनी प्रतिष्ठा, सामाजिक मर्यादा इत्यादि को बनाये रखने के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं।"[१] उन्हें अपनी बेटी की खुशी से ज्यादा अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण लगती है। रानी ससुराल जाने के लिए विरोध करती है। रानी नई विचारधारा का प्रतीक है। रानी की बहन राज एक ऐसी लड़की है

---

१. डॉ.रामजन्म शर्मा स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी नाटक पृ - १९२

जो पति ने अपने पूर्व प्रेमिका से दूसरी शादी करने के बाद भी पति के घर वापस जाना चाहती है। ताराचन्द का बेटा पूरन इस परिवार का ऐसा सदस्य है जो प्रगतिशील समाज का युवक है। झूठ के प्रति विद्रोह करने की वृत्ति से उसने अनेक नौकरियाँ छोडी हैं। रानी और राज दोनो का भी फिर से ससुराल जाना उसे पसन्द नहीं है। नये विचारोंवाला पूरन रानी का साथ देता है। पं.ताराचन्द की शान और झूठा अहं आखिर रानी और पूरन को उनसे अलग कर देता है। पुराने विचारों को माननेवाले पिता और नवमतवादी बेटी-बेटे के बीच पारिवारिक संघर्ष इस एकल परिवार में दिखाई देता है।

"अंजोदीदी" नाटक के परिवार में अंजो उसके पति वकील इन्द्रनारायण और उनका बच्चा नीरज रहते हैं। इन्द्रनारायण को दहेज में अंजो के नाना से उनकी कोठी मिली है। परिवार के सदस्य सभी दृष्टियों से संपन्न होते हुए भी अपनी जिंदगी जी नहीं पा रहे हैं। अंजो को नाना से विरासत में मिले संस्कार उस पर इस तरह हावी हो गये हैं कि परिवार का कोई भी सदस्य उसकी मर्जी के खिलाफ कोई भी काम नहीं कर पाता है। इस परिवार में इन्द्रनारायण, नीरज इतनाही नहीं घर के नौकर भी सब काम ठीक समयपर करते हैं। परिवार का कर्ता होकर भी इन्द्रनारायण अपनी मर्जी के नुसार कोई काम नहीं कर पाते हैं। अंजो की नियमबध्दता के लिए छः सालों से उन्होंने चाट भी नहीं खाया है। नीरज क्रिकेट का कप्तान बनना चाहता है पर उसे माँ की खातिर पढ़ाई करनी पड़ती है। नौकरों के साथ-साथ परिवार के सभी सदस्य समय पर सोते हैं, समय पर उठते हैं, समय पर खाते हैं। इन्द्रनारायणजी का चोरी से दफ्तर में शराब पीना अंजो सह नहीं पाती है तो अपने झूठे अहं की खातिर वह आत्महत्या करती है। मरने से पहले वह अपनी प्रतिकृति ओमी को अपनी बहू के रूप में छोड़ जाती है। अपनी नियमबध्दता, समय की बंदिश और सफाई के लिए पूरे परिवार को अंजो दुःख के घेरे में छोड़ जाती है। अंजो के अहं के कारण पूरा परिवार अंत तक अपनी जिंदगी जी नहीं पाता है।

"भँवर" में अभिज्यात वर्ग के परिवार का चित्रण अश्कजी ने किया है। प्रतिभा इस परिवार में अपने माता-पिता और दो छोटी बहनों के साथ रहती है। उसे जीवन की सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं। पिता सरकारी दफ्तर में अच्छे पद पर काम

करते हैं। वे हमेशा अपने कामों मे उलझे रहते हैं। माँ लंच और डिनर की तैयारी में उलझी रहती है और बहनें मेक-अप में मग्न रहती हैं। परिवार के सभी सदस्य किसी न किसी तरह अपने कामों में उलझे हुए हैं परंतु प्रतिभा अपने पहले प्रेम की असफलता के कारण इतनी निराश हुई है कि सुरेश के साथ शादी कर तो लेती है परंतु बौद्धिक असमानता के कारण वह जल्दही उससे अलग होकर पिता के घर वापस आती है। उसे माँ का डिनर और लंच की चिंता करते रहना, पिता का फाइलों में उलझे रहना और बहनों का सौंदर्य प्रसाधनों में उलझना अच्छा नहीं लगता है। प्रतिभा उच्चशिक्षित है, सुंदर और बुद्धीमान भी है परंतु जीवन से ऊबी हुई है। अपनी सुंदरता और बुद्धि के बल पर वह अन्य पुरूषों को अपनी ओर आकर्षित करती रहती है। प्रतिमा के मित्र जगन के साथ भी प्रतिभा का इस तरह का बर्ताव प्रतिमा को ठीक नहीं लगता है। प्रतिभा उन पुरूषों में से किसी एक को भी अपना नहीं सकती ये उसे भी मालूम है। काल्पनिकता को छोडकर वह जी नहीं सकती है, जो उसकी निराशा का मूल कारण है। उसके परिवार के अन्य सदस्य अपने-अपने कामों में व्यस्त है पर प्रतिभा अपनीही काल्पनिकता में जी रही है। परिवार के अन्य सदस्य जो जिंदगी जी रहे हैं, वह नहीं जी पाती है।

"पैंतरे" में बेगम रशीद और उसके पति रशीद भाई दोनों अपने छोटेसे परिवार में रहते हैं। रशीद भाई फिल्मों में कहानियाँ लिखते हैं और उसीमें नाम कमाना उनका सपना है। बेगम रशीद अपने परिवार के कामों मे ही व्यस्त हैं उन्हें फिल्मों में इतनी दिलचस्पी नहीं है। रशीद भाई एक दिन सामाजिक फिल्मों में कहानी लिखने को मिलेगी इस लालच में चाय पर बुलाये गये डायरेक्टर कादिर की पत्नी को अपने मकान में रहने के लिए दावत देते हैं। परिणाम स्वरूप सचमुच उन्हें अपना फ्लैट छोडना पड़ता है। वे अपनी पत्नी को लेकर अपने मित्र शाहबाज के फ्लैट पर चले जाते हैं। अपने मकान को छोड़ना बेगम रशीद के चाहे इच्छा के विरूद्ध हो पर वह पति के फिल्मों में नाम कमाने की इच्छा के लिए अपना घर छोड़कर पति के साथ चली जाती है। जहाँ परिवार है वहाँ कोई न कोई समस्या तो उत्पन्न होगी पर इस समस्या को पैंतरे नाटक के परिवार के पति-पत्नी समझौते के बल पर सुलझाने का प्रयत्न करते हैं।

"उड़ान" की माया रंगुन के मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है पर रंगुन में हुई बमबारी में उसके सभी परिवारवाले मारे गये हैं। बमबारी में सबकुछ नष्ट हो जानेपर माया जंगलों में जड़ी-बुटियाँ खाकर भटकती रहती है। शुरू में काफीले के साथ और आगे किसी कैम्प में सहारा लेते हुए वह जिंदा रहती हैं। अंत में अपने साथी के साथ जीने का सपना जब टूट जाता है तो वह सहारा दिये हुए रमेश शंकर और साथ न निभानेवाले मदन को छोड़कर अकेली निकल जाती है। "उड़ान" में माया अकेली ही नजर आती है।

अश्क का "जय-पराजय" ऐतिहासिक नाटक है। मेवाड़ के राजा राणा लक्षसिंह अपनी पत्नी, दो पुत्र और एक बेटी के साथ रहते हैं। उनकी बड़ी बेटी की शादी हो चुकी है। बड़े पुत्र चंड का हठ माता-पिता और प्रजा के लिए कितनी बड़ी समस्या उत्पन्न कर देता है और पूरे परिवार को किस तरह बरबादी के मार्ग पर ले जाता है यह अश्क ने दिखाया है। अपने लिए मंडोवर से आया नारियल पिता के हँसी-मजाक को सच मानकर चंड पिता को ही स्वीकारने पर मजबूर कर देता है,चंड हंसाबाई को अपनी माता की सौतन बनाकर लाता है। हंसा चंड की माता तो बनती है पर उसके प्यार को अपने दिल से नहीं निकाल सकती। हंसा चंड से अपने भाई रणमल के द्वारा बदला लेने का निश्चय करती है। रणमल को अपनी सौतेली बहन हंसा से बदला लेकर उसका राज्य हासिल करने के लिए चंड को फुसलाकर उसके छोटे भाई राघव को राज्य से निर्वासित कर देता है और अपने षड्यन्त्र के नुसार राघव की हत्या भी करवाता है। राजा लक्षसिंह के युद्ध में विरगती को प्राप्त हो जानेपर बड़ी रानी सती जाती है। अब चंड का गद्दीपर बैठना हंसा के पुत्र के लिए ठीक नहीं यह कहकर रणमल हंसा के द्वारा चंड को भी निर्वासित कर देता है। आगे वह हंसा के पुत्र को भी मारने की कोशिश करता है। चंड के राजपुती अहं के कारण पूरे परिवार पर आपत्तियाँ आती हैं। चंड अपने भाई माता और पिता सभी को खो बैठता है।

इसप्रकार अश्क के नाटको में समस्याग्रस्त एकलपरिवार अधिक हैं।

४.५ नायिका का परिवार के सदस्यों से संबंध :

४:५:१ नायिका का पति से संबंध -

अश्क के ज्यादातर नाटकों की नायिकाएँ शादी-शुदा हैं इसलिए उनका पति के साथ संबंध गहरे रूप से स्पष्ट हुआ है। परिवार में पति-पत्नी का संबंध गाडी के पहियों की तरह है। गाडी का दोनों में से एक भी पहिया अगर टूट जाये तो गाडी गिर जाती है, उसीप्रकार पति या पत्नी में से कोई भी अपने कर्तव्य से अछुता रहे तो सारा परिवार दुःखी हो जाता है। इसी प्रकार अगर दोनों समझदार हो तो परिवार में कोई भी समस्या क्यों न उत्पन्न हो, परिवार सुखी बन सकता है।

"कैद" की नायिका अप्पी की शादी अखनुर के रेंजर प्राणनाथ से हुई है। अपनी इच्छा के विरोध में शादी होने से अप्पी पति के साथ खुश नहीं है। ऊपरी तौर पर खुश दिखाई देनेवाली अप्पी मनही मन में घुटती हुई नजर आती है। अपने जीवन के सुनहरे दिनों मे दिलीप से किये गये प्यार को वह शादी के बाद भी भुला नहीं पाती है। हमेशा किसी न किसी दर्द से परेशान रहती है। अप्पी को हमेशा बिमार देखकर उसके पति प्राणनाथ उसे कहते हैं - "लेकिन जहाँ बीमारी है, वहाँ इलाज भी तो है। तुम्हारे रोग का तो कोई इलाज ही नहीं। काश! तुम्हारे दर्द की दवा मेरे पास होती।"[१] प्राणनाथ अप्पी को बहुत चाहते हैं पर उसके इस तरह उदास रहने का कोई भी इलाज उनके पास नहीं है।

शादी के पहले हँसती रहनेवाली अप्पी को प्राणनाथ देख चुके हैं। उन्हें लगता है शादी के बाद भी अप्पी अखनुर की प्राकृतिक सुंदरता में खुश रहेगी। रोज दोनों मिलकर सैर को जाया करेंगे। प्राणनाथ उसे सैर को ले जाने की कोशिश भी करते हैं परंतु अप्पी अपने अतीत के सपनों में हमेशा खोयी-खोयी रहती है। उसके इसतरह गुम-सुम रहने से उसके पति अपने कामों मे मन लगाने की कोशिश करते हैं। एक अजीब सी उदासी उनके मन पर भी छाने लगती है वे अप्पी से कहते हैं - "कभी-कभी

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - ४२

सोचा करता हूँ अप्पी, पिछले आठ वर्षों से मैं लगातार सोचता चला आया हूँ, यदि मैं तुम्हारी बहन की मृत्यू के बाद दिल्ली न गया होता तो तुम्हारी हँसी-खुशी का सोता भी यों न सूख जाता और मेरे जीवन की पहाड़ी पर भी यों गहरे धुँधलके न छा जाते।"[१] अप्पी और प्राणनाथ की शादी हुए आठ बरस बीत चुके हैं फिर भी दोनों खुश नहीं हैं। शादी के पहले की अप्पी अब उदासी की मूरत बन चुकी है। वह जिंदा तो है पर नाम के लिए । अप्पी के पति को लगता है अगर उन दोनों की शादी न होती तो शायद दोनों की जिंदगी दुःखी होने से बच जाती। अप्पी पति से कहती तो है "मेरा... लो भला मैं .....जैसी हूँ, बड़ी अच्छी हूँ"[२] परंतु वह सुखी नहीं है। वह अब भी मन ही मन दिलीप को चाहती है। अप्पी और प्राणनाथ दोनों पति-पत्नी का नाता तो निभा रहे है परंतु दोनों भी सुखी नहीं है। नायिका अप्पी का अनमेल विवाह उसके जीवन को दुःखी बनाता है और साथ-साथ पति को भी निराश बनाकर छोड़ता है।

"छठा बेटा" की नायिका माँ पं.बसन्तलाल की पत्नी है। वे रेलवे के रिटायर्ड पदाधिकारी हैं। पति के शराबनोशी होते हुए और जुआ खेलते हुए भी माँ को अपने पति के प्रति हमदर्दी है। बसन्तलाल हमेशा नशे में धुत अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोड़ता है। एक दिन पति बसन्तलाल दस रू.लेकर आटा खरीदने बाजार जाता है और उसे आने के लिए देर हो जाती है तो माँ अपने बेटे गुरू से कहती है "गुरू तनिक साइकिल ले कर जाना तो। आये नहीं, देखों तो कहाँ ठहर गये ?"[३] पति के बेपरवाह रहते हुए भी नायिका माँ को पति के देर तक बाहर ठहरने की चिंता है। कभी-कभी पिता के लिए माँ को बच्चों से सुनना पडता है। बसन्तलाल शराब पीकर नालियों में पडे रहते हैं, गालियाँ देते हैं। बेटों में से किसी के साथ भी उनका बनता नहीं है। सभी बेटे उन्हें अपने पास रखने के लिए इन्कार कर देते है परंतु उनकी पत्नी होने के नाते माँ अपना कर्तव्य निभाती है। वह अपने बच्चों को समझाने का प्रयास करती है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - ४४
२. - वही - पृ - ४८
३. - वही - पृ - ३७

वह हंस से कहती है "बेटा हंस, तुम भी अपने पिता की हालत पर तरस न खाओगे तो कौन खायेगा,बेटा....।"[१]

पति का अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोडकर नशे में धुत रहते हुए भी नायिका माँ अपने पत्नी के रिश्ते को बड़ी निष्ठा से निभाती है।

"पैंतरे" की नायिका बेगम रशीद के पति रशीदभाई फिल्मों में संवाद लिखते हैं। उसी क्षेत्र में नाम कमाना उनका सपना है। बेगम रशीद को फिल्मों में इतनी दिलचस्पी नहीं है। वह अपने घर के कामकाजो में व्यस्त दिखाई देती है। फिर भी पति की हर आरजू को सफल बनाने में सहायता करती है। पति सोशल फिल्मों में संवाद लिखने को मिलेंगे इस आशा पर चायपर बुलाये गये डायरेक्टर कादिर और उसकी पत्नी को अपना फ्लैट पेश करता है। अपनी मकान की दिक्कत का जिक्र कर मिसेस कादिर रशीदभाई के फ्लैट पर कब्जा कर लेती है। अपनी इच्छाओं को मन ही मन में मारकर पति की इच्छा के लिए वह अपना घर छोड़कर पति के साथ चली जाती है। बेगम रशीद का पति अपने किये पर पछताता है पर उसके साथ बिना झगडा किये उसे समझने का प्रयास बेगम रशीद करती है।

"स्वर्ग की झलक" की नायिका भाभी के पति गिरधारीलाल पुराने विचारों के आदमी है। उन्हें अपने भाई का आधुनिक फैशनपरस्त ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की से विवाह करना अच्छा नहीं लगता है। गिरधारीलाल को उमा जैसी गाना-बजाना जाननेवाली आधुनिक विचारोंवाली लड़की रघु के लिए पसन्द नहीं है। वे रघु की साली रक्षा से उसका दूसरा विवाह करना चाहते हैं ताकि रक्षा रघु के बच्चे को अपना समझकर संभाल सके। भाभी अच्छी तरह जानती है कि रघु की इच्छा के खिलाफ उसकी शादी करना याने झगडे का निर्माण करना है। उसके पति गिरधारीलाल जब उसे कहते हैं "शिक्षा को मैं इतना बुरा नहीं कहता, तुमने घर में इतना पढ़ा है, मैंने तुम्हें नहीं रोका, पर कालेज की इन

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क छठा बेटा पृ - १०३

अधिक पढ़ी-लिखी लड़कियों से डर लगता है।"[१] इसके उत्तर में उन्हें समझाती हुई भाभी कहती है " और मैं कहती हूँ कम पढ़ी लड़कियों से डरना चाहिए, जो लड़की अधिक पढ़ जाती है, जीवन की वास्तविकता उसके सामने खुल जाती है। वह जीवन को और भी गहरी नजर से देखना सिख जाती है। बाहय संसार का उसे अधिक पता हो जाता है, समय आने पर वह जीवन के युद्ध में पति पर बोझ न बनकर उसके साथ सब विपत्तियाँ जूझ सकती है।"[२] पति के पुराने विचारों को बदलने का प्रयास कर जीवन की वास्तविकता को उनके सामने रखने का प्रयत्न भाभी करती है। वह पति से कहती है "मैं यह मानती हूँ कि आप को ये सब नये विचार पसन्द नहीं, ...पर शादी आप को तो उससे करनी नहीं और रहा रघु, तो सुबह आपने उसके विचार सुन ही लिये थे, वह इसी में प्रसन्न है।"[३] पति के विचारों को ठुकराकर वह अपना मत प्रकट नहीं करती बल्कि रघु की पसंद को अपनी पसंद मानकर चलना चाहिए यह उन्हें समझाती है। उसके पति गिरधारीलाल भी उसका कहना मानते हैं। नाटक की नायिका भाभी खुद पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी पुराने विचारोंवाले अपने पति को समझने और समझाने की कोशिश करती है।

"जय-पराजय" की नायिका बड़ी रानी मेवाड़ के राजा लक्षसिंह की पत्नी है। एक राजपुतानी होने के नाते दृढ़ता से वह अपना कर्तव्य निभाती है। पति तथा अपने राज्य के प्रति रानी को बड़ा गौरव है। उसे अपने पति पर गर्व है। वह कहती है "मैं अपने सैनिक स्वामी पर गर्व करती हूँ। कौन राजपूतानी है, जिसका हृदय इस विचार से फूल न उठता होगा कि उसका पति सच्चा राजपूत है।"[४] पुत्र का हठ उसके अपने जीवन में सौतन ला सकता है यह मालूम होते हुए भी वह पति को मंडोवर से आया हुआ नारियल वापस भेजने नहीं देती। खुद राजा लक्षसिंह भी इस बात से राजी नहीं है। वे रानी से कहते हैं "रानी तुम ऐसे बातें कर रही हो, जैसे इस बात का तुम से कुछ सम्बन्ध नहीं। मैं इस वृद्धावस्था में तुम्हारे सीने पर सौत ला बैठाऊँगा, इससे

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - ७७
२. - वही - पृ - ७७-७८
३. - वही - पृ - ८५
४. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - २७

तुम्हें दुख नहीं होता ?"[१] राज्य की प्रतिष्ठा के लिए वृद्धावस्था में विवाह करना राजा को मंजूर नहीं है। रानी एक सच्ची राजपूतानी है। जिस मर्यादा और कुल की प्रतिष्ठा की शिक्षा उसने बच्चों को दी है उस शिक्षा के मार्ग में वह नहीं आना चाहती है। आखिर पत्नी के समझाने पर राज्य की प्रतिष्ठा की रक्षा के हेतु राणा लक्षसिंह दूसरा विवाह करते हैं। 'जय-पराजय' की नायिका बड़ी रानी और उसके पति राणा लक्षसिंह दोनों को एक दूसरे के प्रति अपार प्रेम है परंतु राज्य की रक्षा के लिए दोनों भी अपना कर्तव्य निभाते हैं।

"अंजोदीदी" की नायिका अंजो के पति इन्द्रनारायण वकिल हैं। अंजो के मनपर बचपन से ही नाना के विचार हावी होने से पूरे परिवार पर अपने नियमों को जबरदस्ती लादती रहती है। उसके पति भी इसके शिकार है। अंजो ने अपने पति पर वक्त की पाबन्दी, नियमबध्दता और सफाई इन चिजों का इतना प्रभाव डाला है कि ये सब अपनी इच्छा के विरूद्ध होते हुए भी वे अंजो का कहना मानते हैं। वे अंजो की सहेली अनिमा से कहते हैं "और सच कहते हैं, हमने अपने आपको सोलह आने अंजो के अनुरूप बना लिया हैं।"[२] वे अपनी मर्जी के नुसार कोई भी काम नहीं कर पाते हैं। इच्छा होते हुए भी केवल अंजो के कारण इन्द्रनारायण ने पिछले छः सालों से चाट नहीं खाया है। अंजो के कहने के अनुसार ही वे सब काम करते हैं। वे अनिमा से कहते हैं "और अंजो जैसे चलाती है, चले जाते हैं। क्यों अंजो ! दिया कभी शिकायत का मौका हमने तुम्हें ? दिन में तीन बार नहाते हैं, चार-चार बार हाथ-पाँव धोते हैं, कम से कम चार बार खाते हैं और पाँच बार.....।"[३] अंजो के विचारों को अपनी इच्छा के विरूद्ध भी बिना कुछ बोले वे अपनाते हैं। शादी के बाद जीजाजी के बदले हुए रूप के बारे में जब श्रीपत उनसे पूछता है तो वे उसे कहते हैं "अरे भाई समझौता करना ही पड़ता है जीवन में....।"[४] अंजो के अनुशासन से इन्द्रनारायण समझौता करते हैं पर अंजो अपने आप को बदल नहीं पाती । इन्द्रनारायण अपनी कचहरी में चोरी-चोरी शराब पीते

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - ६३
२. उपेंद्रनाथ अश्क अंजोदीदी पृ - ६०
३. - वही - पृ - ५९
४. - वही - पृ - ८८

हैं यह जब अंजो को मालूम होता है तो वह जहर खाकर आत्महत्या करती है और सहेली अनिमा को कह जाती है कि सबसे कहना पति की शराबनोशी के कारण उसे फिट आ गया था। अपने अति अनुशासन प्रियता के कारण वह समझदार पति के साथ भी खुश नहीं रह पाती । अपने अहं की खातिर अपने आप को समाप्त कर डालती है।

माँ, बेगम रशीद और बड़ी रानी ये नायिकाएँ पति को ही अपना सबकुछ मानती है अतः उनमें त्याग, कर्तव्यपरायणता, निष्ठा तथा सहनशीलता दिखाई देती है। अप्पी अपने पति के साथ खुश नहीं है। वह मजबुरी से अपना वैवाहिक जीवन जीती है तो अंजो अपने अहं के कारण अपने और पति के जीवन को भी दुःखी बनाती है। इसप्रकार विवेच्य नाटकों में पति-पत्नी के संबंध अलग-अलग रूपों में दिखाई देते हैं।

४:५:२ <u>नायिका का बच्चों से संबंध</u> -

अश्क के नाटकों की नायिकाओं का परिवार के सदस्यों में स्थित उनका बच्चों के साथ संबंध देखना भी जरूरी है। "कैद" की नायिका अप्पी अपनी शादी-सुदा जिंदगी में खुश नहीं है। संसाररूपी कैद में बँधी हुई वह केवल अपना कर्तव्य निभाती है। अपने पूर्वजीवन में दिलीप से किये गये प्यार को वह भूल नहीं पाती है। वह हमेशा उदास नजर आती है। अपनी इस उदासी के कारण वह दिशी और निम्मो इन दो बच्चों को भी अपना स्नेह नहीं दे पाती है। अपने मन की घुटन को क्रोध के रूप में बच्चों पर निकालती है। आठ-दस बरस के छोटे बच्चे खेलते भी हैं और झगड़ते भी हैं परंतु अप्पी उन्हें समझने की कोशिश नहीं करती है। दीशी और निम्मो जब लड़ते हुए अप्पी के कमरे में आते हैं तब अप्पी चिल्लाती है "अरे कोई है, निकालों इन कम्बख्तों को मेरे कमरे से बाहर ! पल भर का चैन हराम हो गया है इन शैतानों के मारे! भगवान ऐसी औलाद दुश्मन को भी न दे।"[१] बच्चों का खेलते हुए लड़ना भी उसे सहन नहीं होता है, उन्हें समझाने की बजाय उनपर गुस्सा अधिक करती है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क कैद पृ - ४१

दिलीप के आने की खबर सुनते ही अप्पी बच्चों से प्यार जताने लगती है। उन्हें नहा-धोकर तैयार करती हैं। बच्चों के साथ समझदारी से पेश आती है। उसके चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई देती है, मगर दिलीप के जाने के बाद अप्पी फिर अपनी पुरानी स्थिति में वापस जाती है। खुद दुःखी होने के कारण वह बच्चों को अपना स्नेह नहीं दे पाती है। अप्पी के इसतरह के रूखे संबंध के कारण बच्चे अपनी माँ के प्यार से वंचित रहते हैं।

"अंजोदीदी" की नायिका अंजो को नीरज नामक एक छोटा बेटा हैं। परिवार के अन्य सदस्यों की तरह उसे भी अंजो ने अपने नियम, सभ्यता तथा शिष्टाचार से बाँधा है। वह अपने सब काम समय के नुसार करता है वक्त पर उठता है, वक्त पर खाता है, पढ़ता है और वक्त पर सोता है। वह क्रिकेट का कप्तान बनना चाहता है पर अंजो उसे आई.ए.एस.बनाना चाहती है इसलिए नीरज पर उसकी कड़ी दृष्टि है। उसके पढ़ने का और खेलने का समय भी अंजो ने तय कर रखा है। नीरज से रोज वह छः घंटे पढ़ाई करवाती है। वह उसे कहती है "यहाँ क्या कर रहे हो ? उधर चलो अपने कमरे में। पढ़ने का समय हो गया है। अभी तुम्हारे मास्टर साहब आते होंगे....काम कर लिया कल का तुमने ?"[१] अंजो उसपर दबाव डालकर उसकी इच्छा के विरोध में भी उससे पढ़ाई करवा लेती है। अंजो की सफाई, नियमबध्दता और वक्त की पाबन्दी के कारण नीरज अपना जीवन जी नहीं पाता है। उसका क्रिकेट कप्तान बनने का सपना अधुराही रह जाता है। अंजो नाना के विचारों का प्रतीक है। उन विचारों को वह अपने बेटे नीरज पर लादती है फलस्वरूप वह दोनों में से कुछ नहीं बन पाता। वह ना क्रिकेट का कप्तान बनता है और ना आई.ए.एस बन पाता है। अंजो के लादे गये विचारों के कारण नीरज अपनी इच्छानुसार विकसीत नहीं हो पाता है।

"छठा बेटा" की नायिका माँ के छः बेटे हैं। उनमें से पाँच बेटे उसके साथ रहते हैं और छठा बेटा कही निकल गया है। रिटायर्ड पिता का शराब पिकर बेपरवाह

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अंजोदीदी पृ - ७७

रहना बच्चों को पसंद नहीं है। माँ अपने बच्चों को समझाने का प्रयास करती है। आधुनिक समाज में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ पारिवारिक झगड़ो में बच्चे और माँ-बाप में तणाव उत्पन्न होता है। नाटक की नायिका माँ एक ऐसी माँ है जिसे बच्चों से प्यार भी है और पति से आस्था भी है। माँ अपने पति के शराबनोशी होते हुए भी परिवार के सुख के हेतु बच्चों को समझाने का प्रयत्न करती है। उन्हें अपनी जिम्मेदारी का एहसास दिलाती है। वह अपने बच्चों से कहती है "क्या तुममें एक भी ऐसा नहीं जो अपने माता-पिता को उनकी सब त्रुटियों, उनके सब व्यसनों के साथ, अपने पास इज्जत के साथ रख सके ?"[१] वह कहती है माँ-बाप बच्चों को डाँटते भी हैं और प्यार भी करते हैं। तुम लोगों के शरीर में हमारा ही खून दौड रहा है। हमारे कारण ही तुम लोग आज इतने ऊँचे-ऊँचे पदों पर काम कर रहे हो, इज्जत से जिंदगी गुजार रहे हो। बच्चे जब अपने कर्तव्य से हटना चाहते हैं तो वह उन्हें डाँटकर अपना कर्तव्य याद दिलाती है। छठा बेटा की नायिका माँ बच्चों से प्यार भी करती है और वक्त आने पर उन्हें अपना कर्तव्य याद दिलाने में हिचकिचाती भी नहीं है।

"जय-पराजय" की नायिका "बड़ी रानी" अपने बेटे चंड को एक राजपूतानी होने के नाते बचपन से ही कुल की मर्यादा तथा राज्य की प्रतिष्ठा का पालन करने की शिक्षा देती आयी है। चंड पिता के "हम बूढ़ो के लिए नारियल कौन लायेगा ?"[२] कहने पर मंडोवर की राजकुमारी हंसा को अपनी माँ मान लेता है। अपनी माँ के लिए यह सौतन लाना है यह जानते हुए भी वह अपने कर्तव्य से नहीं हटता है। वह अपनी माँ से कहता है "मुझे विश्वास है कि जिस माँ ने मुझे पितृभक्ति का पाठ पढ़ाया है, वह पति-भक्ति को अच्छी तरह जानती है। माँ! व्रत चाहे मैंने लिया है, किन्तु उस में शक्ति तो तुम्हारी ही काम करती है।"[३] अपने पुत्र को रानी ने जो शिक्षा दी है उसे प्राण देकर भी वह निभायेगा इसका रानी को विश्वास है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क   छठा बेटा   पृ - १०६
२. उपेंद्रनाथ अश्क   जय-पराजय   पृ - ४६
३. - वही -   पृ - ६४

जब अपने विवाह का परिणाम गृह-युद्ध, इर्षा तथा द्वेष का रूप लेगा ऐसा राजा को लगता है तो रानी उनसे कहती है "मेरे पुत्र पर आप यह अभियोग नहीं लगा सकते। वह यदि प्रतिज्ञा करना जानता है तो उसे प्राणपण से निभाना भी जानता है।"[१] रानी को अपने पुत्र की प्रतिज्ञा पर पूरा विश्वास है क्योंकि बचपन से ही उसने बेटे को दृढ़निश्चयी बनाया है। एक सच्चे राजपुत की तरह माँ और बेटा दोनों भी अपने कर्तव्य को निभाते हैं। दोनों भी ऐसी स्थिति में हैं कि उनके मन में कहीं न कहीं दर्द है पर राज्य की प्रतिष्ठा के लिए दोनों एक-दूसरे को अपने-अपने कर्तव्य की याद दिलाते हैं।

नायिकाओं का बच्चों के साथ सम्बन्ध में यह दिखाई देता है कि अप्पी अपनी निराशा के कारण तो अंजो अपनी सनकी मनोवृत्ति के कारण बच्चों को अपना प्यार नहीं दे पाती हैं तो माँ और बड़ी रानी दुःख में भी कर्तव्य तथा त्याग के द्वारा बच्चों को उनके कर्तव्य की याद दिलाती हैं।

४:५:३ नायिका का भाई से संबंध -

"बड़े खिलाड़ी" की नायिका "सुजला" एक मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है। किराये पर रहनेवाले केवल और उसकी बहन शीला, सुजला की माँ रत्नप्रभा की सेवा कर सुजला की शादी केवल के साथ पक्की करते हैं। वास्तव में यह शादी सुजला को पसंद नहीं है परंतु सामाजिक रूढ़िबद्ध बंधनों में जकड़ी हुई सुजला शादी का विरोध नही कर पाती है। घर के बाकी सभी लोग विरोध न करते हुए चुप रहते हैं परंतु उसका छोटा भाई हरीश इस शादी के पूर्णतः विरोध में है। सुजला का सिर्फ रोते रहना उसे पसंद नहीं है। वह सुजला को शादी के लिए विरोध करने के लिए कहता है और खुद भी उसका साथ देने के लिए तैयार है। वह अपने चाचा से कहता है "हम तो शुरू ही से इस विवाह के पक्ष में नहीं थे, पर ममी पर बेटे केवल ने जादू कर रखा है और सुज्जो को रोने के सिवा कुछ आता नहीं। लाख बार कहा है कि एक दफा हमारे

१. उपेंद्रनाथ अश्क जय-पराजय पृ - ६३

सामने डैडी से कह दे मैं नहीं करूँगी यहाँ शादी, फिर हम देखते हैं, कैसे होती है, पर वह कुछ करती ही नहीं, बस रोने लगती है।"[१] सुजला का युँही रोते रहना उसे मंजूर नहीं है। उसके एक बार ना कहने पर वह उसका साथ देने के लिए तैयार है।

अपनी माँ के सिर-पैर दबाकर, सिनेमा दिखाकर, कॉफी हाऊस ले जाकर अपने जाल में फँसानेवाले केवल के साथ अपनी बहन की शादी उसे मंजूर नहीं है। शादी से पहले ही चतुराई से केवल और शीला दहेज की शर्ते रखकर उन्हें तंग करना शुरू करते हैं तो हरीश अपने चाचा से कहता है "चाचाजी, इस घर मे मेरी कोई सुनता नहीं। मै आपसे सच कहता हूँ - मुन्नी वहाँ जाकर रोयेगी - रोयेगी - मैं लिखे देता हूँ! अब भी कुछ नही बिगड़ा। किसी तरह उस गरीब को इस चक्कर से निकाल लीजिए।"[२] हरीश को अपने बहन की बहूत चिंता है। सुजला केवल के साथ खुश नहीं रहेगी यह सोचकर वह सबको बार-बार समझाता है पर उसकी बात सब लोग इतनी गंभीरता से नहीं लेते हैं। अब सुजला की ननद इस शादी में अपनी प्रतिष्ठा के लिए सुजला के पिता के मित्र संतराम को शादी में आने के लिए अटकाव करती है तो घर के सभी लोग इस शादी से विरोध में हो जाते हैं और अंत मे शादी टूट जाती है। इस बात का हरीश को इतना आनंद हो जाता है कि वह सुजला से कहता है "तुमसे तो कुछ हुआ नहीं मुन्नो पर उस झुर्ल से तुम्हें छुटकारा दिला दिया है, इसकी दाद दो और आइसक्रीम की पार्टी तैयार रखो।"[३] नाटक की नायिका सुजला एक ऐसी खुशकिस्मत बहन है जो खुद अपनी शादी का विरोध न करते हुए भी उसका भाई हरीश उसके मन की बात जान लेता है और उस शादी के विरोध में खड़ा होकर अपनी बहन को बर्बाद होने से बचाता है।

"अलग-अलग रास्ते" की नायिका रानी का भाई पुरन आज की आधुनिक पीढ़ी की भावनाओं का प्रतीक है। वह अत्याचार और रूढ़ि का विरोधी है। उस पर

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क बड़े खिलाड़ी पृ - ६०
२. - वही - पृ - ९७
३. - वही - पृ - १४३

होनेवाले जुल्म और अपने स्वाभीमान की खातिर वह अनेक नौकरियाँ छोड़ता है। अपनी बहन रानी के पति त्रिलोक की लोभीवृत्ति से वह परिचित है । दहेज लाने के लिए जब ससुरालवाले उसे बहुत तंग करने लगते हैं तो रानी वह घर छोड़कर पिता के घर आ जाती है। उसके पिता पं.बसन्तलाल उसे दोषी समझते हैं तब रानी अपने भाई पुरन से पूछती है " पूरन क्या तुम भी मुझे दोषी समझते हो ?"[१] इसके उत्तर में पूरन उसे कहता है "दोषी ? (जोर दे कर) कभी नहीं ! मुझे तो इस बात का गर्व हैं कि तुमने अपने स्वाभीमान की रक्षा की।"[२] पैसों के लिए कष्ट देनेवाले लोगों के घर अपनी बहन का वापस जाना उसे ठीक नहीं लगता है। अपने पिता के विचारें का विरोध कर रानी को समझाते हुए वह कहता है "तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो रानी! पिताजी पति को पत्नी का परमेश्वर समझते है तो समझें, मैं ऐसा नहीं समझता। पति मेरे निकट पत्नी का परमात्मा नहीं, उसका साथी है और उस साथ को निबाहने का सारा उत्तरदायित्व पत्नी पर ही नहीं, पति पर भी है।"[३] पूरन आधुनिक विचारें का अनुयायी है। वह पति-पत्नी का संबंध एक-दूसरे के साथी के रूप में मानता है।

एक साल बाद घर और मोटर की लालच में त्रिलोक रानी को लेने के लिए आता है तो पूरन उसका विरोध करता है और रानी को उसके साथ भेजना नहीं चाहता है। वह त्रिलोक से कहता है "सपने में भी! शायद आप हिन्दु नारी के सपने भी जानते हैं।.....और आप समझते हैं कि आप चाहे जो अत्याचार करे, वह सती की प्रथा बन्द होने के बाद भी सती, पुरूष के साधुता छोड़ देनेपर भी साध्वी और पति के कर्तव्यच्युत होने के बाद भी पतिव्रता बनी रहेगी। किन्तु वकीलसाहब, आज हिन्दु नारी बदल रही है, हिन्दू-मुसलमान क्या, भारत की नारी - मात्र बदल रही है, उसके सपने बदल रहे हैं, आप आज की नारी के सपने तो क्या, उसकी भावनाओं को भी नहीं समझते!"[४] पूरन आज की नई पीढ़ी का प्रतीक है वह नारी के बदलते रूप को त्रिलोक के सामने रखता है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अलग-अलग रास्ते पृ - ६६
२. - वही - पृ - ६६
३. - वही - पृ - ६७
४. - वही - पृ - ९७

पिता के कहने पर भी रानी त्रिलोक के साथ जाने के लिए इन्कार कर देती है तब पिता उसे अपने घर से भी बाहर निकल जाने को कहते हैं। तब पूरन सबसे कहता है "रानी को कहीं और नहीं जाना होगा यह मेरे साथ जायेगी जिसे आप लोग निकम्मा और आवारा समझ रहे है, वह अपनी सारी आवारागर्दी छोड़कर, तन-मन से परिश्रम करेगा, कमायेगा और अपनी बहन को इस योग्य बनायेगा कि वह अपने पाँवों पर खड़ी हो सके और अपने पिता की मोटर या मकान के बल पर नहीं, अपनी योग्यता के बलपर आदर सम्मान पा सके।"[१] पूरन रूढ़ि-परंपरा के प्रति विद्रोह कर बहन को उनसे लड़ने के लिए प्रेरित करता है। वह जानता है कि जब-तक रानी अपने पिता या पति के बलपर जीती रहेगी तब तक उसपर अत्याचार होता रहेगा। इसलिए वह उसे शिक्षित बनाना चाहता है ताकि वह खुद कमा सके। नाटक की नायिका रानी का पूरन एक ऐसा भाई है जो पुरूष के अत्याचारों से नारी के स्वाभीमान की रक्षा के लिए अपनी बहन को लेकर स्वयं घर छोडकर चला जाता है। इससे उसका अपनी बहन के प्रति उत्कट प्रेम प्रकट होता है।

४:५:४ <u>नायिका का बहन से संबंध</u> -

"अलग-अलग रास्ते" की नायिका रानी की छोटी बहन राजो भी वैवाहिक जीवन में उत्पन्न किसी न किसी समस्या के कारण अपने पिता के घर आयी है। राज को मालूम है कि उसका पति मदन विवाह के पहले सुदर्शना से प्यार करता था और मजबुरी से राज के साथ विवाह करने के बाद भी वह सुदर्शना को भूल नहीं पाता है। मदन राज की उपेक्षा करता है उससे दूर भागने की कोशिश करता है फिर भी राज एक भारतीय नारी के आदर्शों से चिपकी हुई है। वह मदन से अलग अपने अस्तित्व को स्वीकारती नहीं है। राज का इस तरह मदन के बुरे बर्ताव के बाद भी उससे लगाव रानी को मंजूर नहीं है। वह मदन को भी दोषी ठहराती है। वह राज से कहती है "वे तो पढ़े-लिखे हैं, समझदार हैं; प्रोफेसर हैं बच्चे नहीं कि उनके पिता ने दो चाँटे मारकर उन्हें

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अलग-अलग रास्ते पृ - १२५

ब्याह के मण्डप पर बैठा दिया हो।"[१] पढ़े-लिखे होकर भी मजबुरी से विवाह कर राज का जीवन बरबाद करने का मदन को कोई हक नहीं था ऐसा रानी का कहना है। इतनाही नहीं राज को मायके रहने पर मदन सुदर्शना से दूसरा विवाह करता है। पति के दूसरे विवाह के बाद भी राज का फिर ससुराल जाना उसे पसंद नहीं है वह कहती है "...और इस अपमान के बाद राज वहाँ क्यों जाय ?"[२] बिना किसी दोष के भी पति के दूसरी शादी करने के बाद भी राज का वहाँ जाना रानी उसका अपमान समझती है। इतना सब कुछ होने के बाद भी राज पति को परमेश्वर मानकर उसके पास वापस जाना चाहती है तो रानी उसे कहती है "भीगी लकड़ी की तरह तुम्हें सुलगना पसन्द है।"[३] पति के छोड देने के बाद भी उसके पास जानेवाली अपनी बहन राज को नायिका रानी बदलना चाहती है। पुराने परंपराओ के समाज में नये मूल्यों को स्थापित करना चाहती है परंतु पति को देवतातुल्य माननेवाली राज को रानी के विचार पसंद नहीं है। अपनी बहन राज की जिंदगी बरबाद होने से बचाने के लिए रानी उसे बहुत समझाती है परंतु राज नहीं मानती है। यहाँ एक बहन का दूसरी बहन के प्रति प्यार दिखाई देता है। साथ साथ दोनों के विचारों में भिन्नता दिखाई देती है।

४:५:५ <u>नायिका का देवर के साथ संबंध</u> -

"स्वर्ग की झलक" में नायिका भाभी का अपने देवर रघु के साथ आदर्श और स्नेहपूर्ण संबंध दिखाई देता है। भाभी ने रघु को बचपन से अपने बच्चे की तरह सँभाला है इसी कारण उसमें देवर के प्रति आत्मीयता दिखाई देती है। एक बार कम पढ़ी-लिखी लड़की के साथ शादी कर रघु पछता चुका है। पहली पत्नी की मृत्यू के बाद जब घर में उसकी शादी की बात चलती है तो अब वह ज्यादा पढ़ी लड़की से विवाह करना चाहता है। कॉलिज का शिक्षण पूरा करने से भाभी के विचारों में प्रौढ़ता दिखाई देती है। वह अपने देवर के विचारों को अच्छी तरह से समझती है। देवर को

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अलग-अलग रास्ते पृ - ७७
२. - वही - पृ - ११४
३. - वही - पृ - १३९

बचपन से ही पालने की वजह से और भाभी एक दिन रघु से हँसी-हँसी में कहती है "भाई हमारे देवर को तो ऐसी लड़की चाहिए जो श्रीमती अशोक की तरह साडी पहन सके, श्रीमती राजेन्द्र की तरह डेढ़ दर्जन ढंग से बाल बना सके और उन लेड़ी डाक्टर की भाँति घर की सफाई.....।"[१] देवर को आधुनिक फैशनपरस्त लड़की चाहिए यह भाभी जानती है इसलिए वह रघु को मित्रों की पत्नियों के नाम लेकर उसे चिढ़ाती है।

अपने पुराने विचारों के पति को वह देवर की खातिर बदलना चाहती है। अपनी सास के स्वर्गवास के बाद तीन साल के देवर को भाभी ने बड़ा किया है इसीलिए वह उसकी इच्छा के विरोध में उसकी शादी नहीं करना चाहती है। रघु के बारे में अपने पति को समझाते हुए कहती है - "श्रद्धा वह हमसे रखता है, आप कहेंगे तो वह रक्षा से विवाह भी कर लेगा, पर आयुपर्यन्त जलता-भुनता रहेगा।"[२] भाभी को इतना विश्वास है कि वह पति के कहने पर रघु अपनी ही साली रक्षा जो केवल छठी कक्षा तक पढ़ी है उससे शादी कर लेगा परंतु रघु के विचारों को समझनेवाली भाभी ऐसा नहीं करना चाहती है। भाभी आगे रघु को पसंद आयी पढ़ी-लिखी लड़की उमा से उसकी शादी पक्की करने में उसकी सहायता भी करती है। "स्वर्ग की झलक" की नायिका भाभी का रघु के साथ भाभी और देवर का एक स्नेहपूर्ण पारिवारिक संबंध है।

४:५:६ नायिका का पिता से संबंध -

"अलग-अलग रास्ते" की नायिका रानी के पिता पं.ताराचन्द पुरातन विचारों को माननेवाले रूढ़िवादी आदमी है। उनका इन पुराने विचारों के प्रति जो हठ है वह विश्वास की दृढ़ता में बदल गया है, इसीकारण किसी भी नयी विचारधारा को वे स्वीकार नहीं कर पाते हैं। दहेज के नामपर होनेवाले ससुराल के लोगों के अत्याचारों से तंग आकर पिता के घर आयी हुई बेटी को पिता पं.ताराचन्द फिर उसी नरक में भेजना चाहते हैं।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क स्वर्ग की झलक पृ - २९-३०

२. - वही - पृ - ७५

वे पुरानी विवाह-संस्था के समर्थक हैं। वे अपनी बेटी से कहते हैं "पति जिस हाल मे रखे, उसमें रहना चाहिए और ससुराल के दोष गिनने के बदले गुण ढुँढने चाहिए।"[१] उनके विचार से पति ही पत्नी का परमेश्वर होता है। वह जिस हाल में उसे रखे उसी में रहना नारी का कर्तव्य है। रानी पिता के इन विचारों से सहमत नहीं है। वह उनके प्रति विरोध दर्शाती है।

पं.ताराचन्द में अपने को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की प्रवृत्ति भी है इसीकारण रानी का विवाह असफल हो जाता है। दहेज के लिए एक बरस घर में रहनेवाली रानी को फिर ससुराल भेजने के लिए वे उसके पति को मोटार और घर का लालच दिखाते हैं। वे सरदारीलाल से कहते है "उसे जिस बात की शिकायत है, वही, मैं दूर कर दूँगा। मोटर और मकान की बात है, वह मैं दे दूँगा।"[२] जिन लोगों से ऊबकर रानी वापस आयी है फिर उसी जगह उसकी इच्छा के विरूध्द पं.ताराचन्द उसे भेजना चाहते हैं। उन्हें यह डर है कि रानी के वापस न जाने से त्रिलोक कहीं दूसरी शादी न कर लें। परंतु रानी पुराने विचारों के प्रति विद्रोह करनेवाली नारी है। वह पिता का विरोध कर ससुराल जाने से इन्कार कर देती है और भाई के साथ पिता का घर छोड़कर चली जाती है। इस नाटक में नायिका का पिता के रूढ़िवादी परंपराओं के प्रति अपने नये विचारों का संघर्ष दिखाई देता है।

४:५:७ <u>निष्कर्ष</u> :-

मनुष्य को समाज में जीना हो तो बिना परिवार के जीना लगभग असंभव है। मनुष्य का सामाजिक, आर्थिक और मानसिक विकास होने में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय समाजव्यवस्था मे दिखाई देनेवाले परिवारों की तरह संयुक्त परिवारों के साथ अश्क के नाटकों में समस्याग्रस्त एकल परिवारों की संख्या अधिक है। अश्क

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क अलग-अलग रास्ते पृ - ६५

२. - वही - पृ - ६८

के नाटकों की नायिकाओं का पारिवारिक जीवन किसी न किसी समस्या से ग्रस्त है। कुछ नाटकों की नायिकाएँ परिवार में दुःखी होते हुए भी कर्तव्य तथा त्याग से जीवन में आशावादी हैं। अप्पी और सुजला जैसी नायिकाओं का पारिवारिक जीवन निराशा और घुटन के साथ रूढ़ि की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। 'भँवर' की प्रतिभा अंत तक कुण्ठाग्रस्त दिखाई देती है। रानी का पारिवारिक जीवन दुःखी तथा यातनामय होते हुए भी विद्रोह कर उसे सुखी बनाने का प्रयत्न करती है। इसप्रकार अश्क के नाटकों की नायिकाओं का पारिवारिक जीवन समस्यापूर्ण है।

-o-o-o-o-